इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BPSC - 109

तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक प्रक्रियाएं और संस्थाएँ

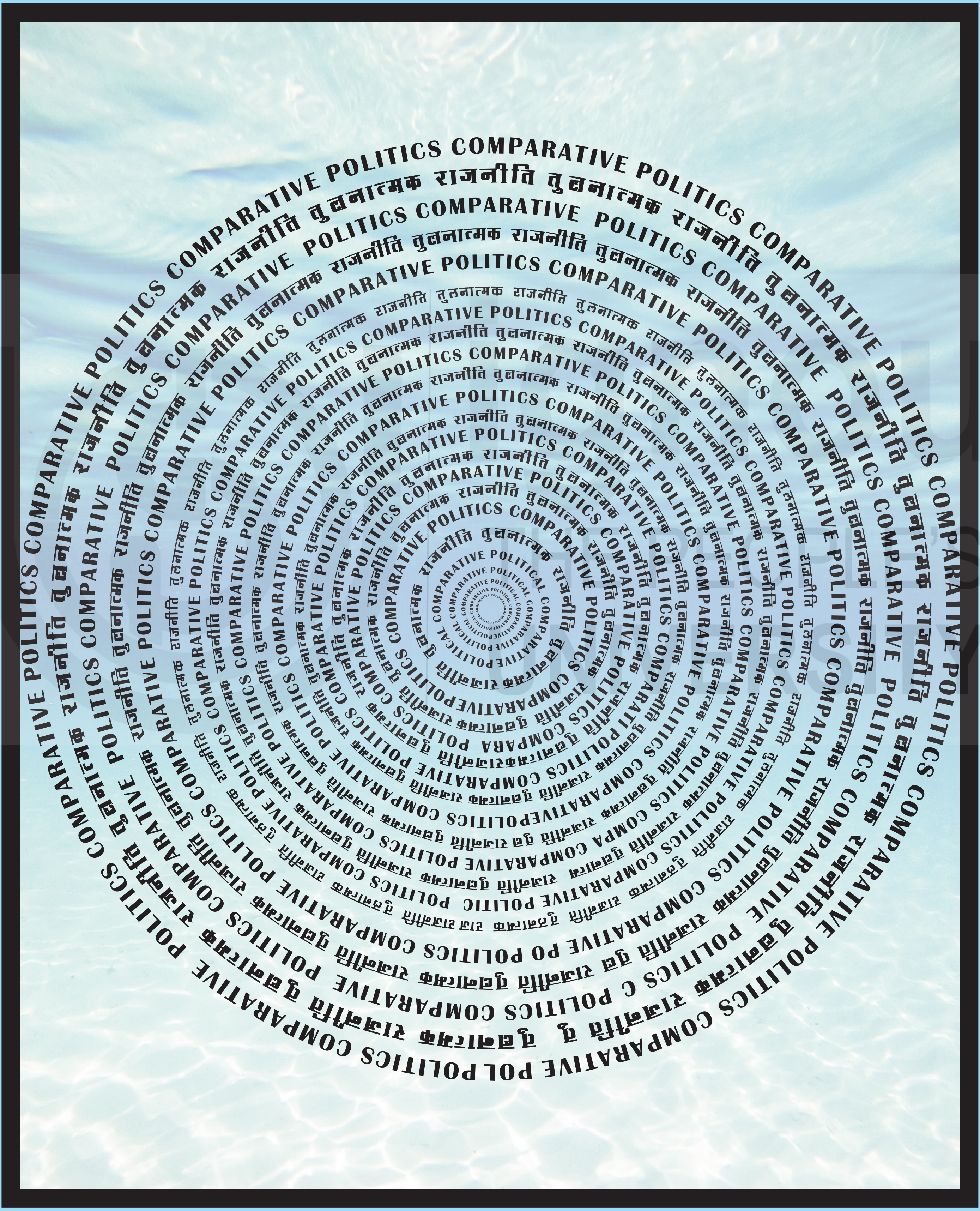

BPSC-109

तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक प्रक्रियाएं और संस्थाएँ

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

कार्यालयी सहयोग
श्री राकेश चन्द्र जोशी,
सहायक कार्यपालक (डीपी), सा.वि.वि.,
इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली –110068

सितम्बर, 2021

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

@ सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कृति का कोई भी अंश, मिमियोग्राफ या किसी भी अन्य रूप में, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
लेजर टाइप सेटिंग : श्री राकेश चन्द्र जोशी, सहायक कार्यपालक (डीपी), सा.वि.वि., इग्नू, eSnku x<+h] ubZ fnYyh &110068
मुद्रक :

विशेषज्ञ समिती

प्रो. दरवेश गोपाल **(अध्यक्ष)**
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. अब्दुल नाफे (अवकाशप्राप्त)
अमेरिकन, लैटिन अमेरिका और कैनेडियन
अध्ययन केंद्र
एस.आई.एस., जे.एन.यू.,
नई दिल्ली

प्रो. विजयशेखर रेड्डी
(पाठ्यक्रम संयोजक)
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. ए.वी. वीजापुर
राजनीति विज्ञान विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़, यू. पी.

प्रो. आर एस. यादव (अवकाशप्राप्त)
राजनीति विज्ञान विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा

प्रो. जगपाल सिंह
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. अनुराग जोशी
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

संपादक

प्रो. विजयशेखर रेड्डी
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय

डॉ. डी. आनन्द
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान संकाय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय

पांठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई 1	राजनीतिक संस्कृति	डॉ. बोरुन डे, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ ,असम
इकाई 2	राजनीतिक आधुनिकता और	डॉ. चाक्रली ब्रम्हय्या, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान और मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश
इकाई 3	राजनीतिक विकास	
इकाई 4	राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली	डॉ. विकास चन्द्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, उत्तर प्रदेश
इकाई 5	दल प्रणाली	डॉ. तुलिका गौर, अतिथी व्याख्याता, नान–कॉलिजिएट वुमन्स एजुकेशन बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 6	दबाव समूह	डॉ. किशोरचन्द नॉइंगथम, परामर्शदाता, राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू
इकाई 7	निर्वाचन प्रणाली और निर्वाचन प्रक्रियाएँ	डॉ. तुलिका गौर, अतिथी व्याख्याता, नान–कॉलिजिएट वुमन्स एजुकेशन बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 8	पश्चिमी यूरोप में राज्य का विकास	डॉ. गजाला फरीदी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान संकाय, साउथफील्ड कॉलेज, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल
इकाई 9	औपनिवेशिक राज्य	प्रो. आशुतोष कुमार, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान संकाय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
इकाई 10	बहुलवाद, राष्ट्र और राज्य	डॉ. नेहा किशोर, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान संकाय, पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 11	औपनिवेशिक देशों में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया	प्रो. आशुतोष कुमार, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान संकाय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
इकाई 12	उत्तर–सत्तावादी और उत्तर–साम्यवादी देशों में लोकतंत्रीकरण	डॉ. राज कुमार शर्मा, सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय, गाँधीनगर, गुजरात
इकाई 13	विकेन्द्रीकरण (ब्राजील, भारत और ब्रिटेन)	डॉ. प्रियवंदा मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, सिंबॉयसिस लॉ स्कूल, सेक्टर–62, नोयडा, उत्तर प्रदेश
इकाई 14	संघवाद (कनाडा, आस्ट्रेलिया और भारत)	डॉ. विकास चन्द्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, उत्तर प्रदेश

अनुवादक मंडलः

डॉ. प्रदीप टंडन (इकाई 3,4,5,6,7 और 9),
डॉ. राज कुमार शर्मा (इकाई 8,10,11 और 12)
सुश्री प्रतिभा रानी (इकाई 1,2,13 और 14)

हिंदी पुनरीक्षणः

डॉ. राज कुमार शर्मा,
भूतपूर्व परामर्शदाता, राजनीति विज्ञान संकाय,
इग्नू, नई दिल्ली –110068

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

खण्ड I	**तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण**	
इकाई 1	राजनीतिक संस्कृति	11
इकाई 2	राजनीतिक आधुनिकता	28
इकाई 3	राजनीतिक विकास	43
खण्ड II	**प्रतिनिधित्व और राजनीतिक भागीदारी**	
इकाई 4	राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली	57
इकाई 5	दल प्रणाली	74
इकाई 6	दबाव समूह	90
इकाई 7	निर्वाचन प्रणाली और निर्वाचन प्रक्रियाएँ	106
खण्ड III	**तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राज्य**	
इकाई 8	पश्चिमी यूरोप में राज्य का विकास	125
इकाई 9	औपनिवेशिक राज्य	138
इकाई 10	बहुलवाद, राष्ट्र और राज्य	153
खण्ड IV	**लोकतांत्रीकरण**	
इकाई 11	औपनिवेशिक देशों में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया	171
इकाई 12	उत्तर–सत्तावादी और उत्तर–साम्यवादी देशों में लोकतंत्रीकरण	184
खण्ड V	**संघवाद और विकेन्द्रीकरण**	
इकाई 13	विकेन्द्रीकरण : ब्राजील, भारत और ब्रिटेन	199
इकाई 14	संघवाद : कनाडा, आस्ट्रेलिया और भारत	213

तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक प्रक्रियाएं और संस्थाएँ

दुनिया के अग्रणी सभ्यताओं के प्रगति में 'लोकतंत्र की अवधारणा' ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्व में लोकतंत्र ने सत्ता हस्तांतरण से लेकर आत्मनिर्णय, जनभागीदारी समाज में शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व के साथ रहना सिखाया है। लोकतंत्र ने साम्राज्यवादी व्यवस्था को जनवादी या जनभागीदारी व्यवस्था में क्रांतिकारी रूप से परिवर्तित किया है। लोकतंत्र ने राजसत्ता को जनसत्ता की सिष्टम बना दिया। 1980 के दशक में सोवियत संघ के विघटन के बाद और लोक तांत्रिकरण की तीसरी लहर के संदर्भ में प्रमुख राजनीतिक विद्वानों ने मान लिया कि उदारवादी लोकतंत्र का स्वरूप ही शासन का एकमात्र केन्द्रीय मॉडल बनेगा। लेकिन उसके साथ वैश्वीकरण के वर्चस्व ने 1990 के दशक में एक नई विरोधाभाषी ट्रेंड को सामने ला दिया। इसके साथ कह सकते है कि चाहे विकसित देश हो या विकासशसील देश वहाँ पर जनवादी आंदोलन, लोकतंत्र के समर्थन में आंदोलन और विरोध से वहाँ के समाज में जड़े मजबूत हो रही थी और लोकतांत्रिक समाज में गहरी छाप छोड़ रहा था। लेकिन इसके दूसरे पक्ष के बारे में कह सकते है कि इस तरह के आंदोलनों ने कई देशों में उग्र राष्ट्रवादी (ultra nationalism) आंदोलनों को मजबूत बनाया जिसके कारण लोकतंत्र में सत्ता अधिनायकवाद की तरफ मुड़ गई। इस तरह के कई उदाहरण लोकतांत्रिक विकसित देशों की शासन व्यवस्था में झलकती है। आज दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों में अधिनायकवादी हावी हो रहा है। हाल ही में "*Democratization*" पत्रिका के एक आलेख (मार्च 2019) में ध्यानाकर्षित किया गया है कि लोकतंत्र में अधिनायकवादी राजनीति का वर्चस्व कायम हो रहा है। यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि इस तरह के बदलाव के लिए हमलोग कैसे जिम्मेदार है? आखिर लोकतंत्रीकरण की तीसरी लहर के कौन से कारक इस तरह की घटनाओं को प्रेरित किया? सवाल है कि लोकतंत्र की राजनीतिक स्थिरिता में आर्थिक विकास, शहरीकरण, शिक्षा की प्रगति, लोगों का पलायन आवश्यक है मगर आज क्यो लोकतंत्र में सामूहिक पहचान (जातीय पहचान) धार्मिक उन्माद, सम्प्रदायिकतावाद, गृह युद्ध की खतरे की ओर इशारा कर रहा है, किसी देश की राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं पर वैश्वीकरण का वर्चस्व का असर हो रहा है।

संक्षेप में कह सकते है हम किस तरह की दुनिया में जी रहे है या जीने लायक बना रहे है, इस अध्याय में इन सारे सवालों का जवाब ढुढ़ेंगे खासकर लोकतांत्रिकरण और विकेन्द्रीकरण की चुनौतियों से संबंधित सवालों का हल ढूढेंगे। हम लोग इस पाठ्यक्रम में तुलनात्मक राजनीति के नये तरीकों और दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डालेंगे। उसके साथ ही औपचारिक और कानूनी दृष्टिकोण का अध्ययन करेंगे उसके साथ राजनीतिक गतिविधियाँ, राजनीतिक समाजवाद, दबाव समूह या हित समूह इत्यादि का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे। इस तरह का तुलनात्मक राजनीति में अध्ययन को एक नई ढांचे का प्रयोग करेंगे जिसमें सामाजिक अध्ययन के अन्य विषयों खासकर समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, मानवविज्ञान इत्यादि को एक औजार के रूप में इस्तेमान करेंगे। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से राजनीतिक व्यवस्था, संरचनात्मक और कार्यात्मक दृष्टिकोण इत्यादि को शामिल करेंगे। राजनीति में नये प्रयोग खासकर तुलनात्मक राजनीति में 'नये' और "उभरते" रूझान तथा विकाशील और अविकसित देशों को राजनीतिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डालेंगे।

इस संदर्भ में कह सकते है कि इस तरह सैद्धांतिक और नये दृष्टिकोण तुलनात्मक राजनीति में उभरते और नये अध्ययन जैसे राजनीतिक आधुनिकीकरण, राजनीतिक संस्कृतिवाद, राजनीतिक विकासवाद की ओर व्याख्या करता है।

आधुनिक राजनीति के संदर्भ में – राज्य एक केंद्रीय संस्था के रूप काम कर रहा है। इसके अध्याय तीन में हम लोग उत्तर उपनिवेशवाद और पश्चिमी यूरोप में "राज्य" नामक संस्था का विश्लेषण करेंगे। जहाँ कह सकते है कि जितने भी आधुनिक राज्य है वो बहुलतावाद को बढ़ावा दे रहे है मगर जातीय संघर्ष (ethnic conflict) उनके राष्ट्रीय एकता अखंडता के लिए चुनौती पेश की रहे है। अतः आधुनिक "राज्य" के संस्थागत व्यवस्था का परीक्षण करेंगे कि कैसे ये नयी व्यवस्था बहुलतावाद को बढ़ावा दे रहे है।

खंड दो में हम लोग जनभागीदारी और प्रतिनिधित्व पर चर्चा करेंगे। कोई भी राज्य वहाँ की जनता को बुनियादी अधिकार दिये बिना लोकतांत्रिक नही हो सकता। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वतंत्र रूप से इकट्ठा होने के संविधानिक और राजनीतिक अधिकार ही व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से सरकार की किसी नीति को प्रभावित करने के लिए दबाव बना सकते है। अथवा सत्ता हासिल कर उन नीति को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हो सकते है। किसी भी लोकतांत्रिक राज्य में राजनीतिक दल और दबाव समूह बहुत ही प्रभावशाली माध्यम है जो समाज और सरकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है जो प्रतिनिधित्व और चुनाव प्रणाली सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा सकते है। आप अनुभव कर सकते है कि किस प्रकार लोकतंत्र में चुनाव प्रणाली प्रतिनिधियों का चुनाव, मताधिकार का प्रयोग सत्ता में हिस्सेदारी सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाते है।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि विशिष्ट लोकतांत्रिक प्रणाली चाहे वह छोटा या बड़ा राज्य हो, वे सारे लोकतांत्रिक शासन की चुनौतियों का सामना कर रहे है। उदाहरण के तौर पर हम लोग पांच देशों के अध्ययन करेंगे जिनमें से तीन राज्य (ब्रिटेन, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया) और विकासशील राज्य (भारत और ब्राज़ील) है। इस पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों में एक समान संरचना है। हर इकाई से आप कुछ न कुछ सीखते है जो आपके उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड I

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण

उपनिवेशवाद के कई वर्षों बाद, तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में विभिन्न विधियाँ अथवा दृष्टिकोण खासकर संस्थागत उपागम राजनीति, समाजशास्त्र और राजकीय अर्थशास्त्र के माध्यम से किसी राज्य/राष्ट्र के राजनीति और सामाजिक घटनाओं से विशिष्ट संबंधों की व्याख्या की जाती थी। उन सबका विश्लेषण "सामाजिक मूल्यों और संसाधनों के वितरण" और संचारित माध्यम पर केंद्रित किया है। ये सारे दृष्टिकोण विभिन्न राज्यों/राष्ट्रों और संस्कृतियों में प्रगति के एक श्रेणीबद्ध पैमाने पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इसे विभिन्न नये विकास के सिद्धांतों के संदर्भ में व्याख्या की जा सकती है। इसे बदलाव के साथ विकास की ओर अग्रसर होने के रूप में समझ सकते है। आधुनिकीकरण के सिद्धांतों के ढाँचें में बदलाव के संदर्भों में परिभाषित कर सकते है। आधुनिकीकरण का सिद्धांत तुलनात्मक राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है जो ऐतिहासिक रूप से जापान और यूरोप के साम्राज्यों के पतन के साथ साथ शीत युद्ध के उदय के साथ प्रचलित हुआ। इस खंड में तुलनात्मक राजनीति के विभिन्न सिद्धांतों के दृष्टिकोण का अध्ययन कर रहे है, जिसमें खासकर राजनीतिक, संस्कृतिवाद, राजनीतिक आधुनिकीकरण और राजनीतिक विकास का अध्ययन करेंगे। ये सब आधुनिकीकरण सिद्धांत से ताल्लुक रखते है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई–1 राजनीतिक संस्कृति*

सरंचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण

1.2.1 राजनीतिक संस्कृति की परिभाषा

1.2.2 राजनीतिक संस्कृति के घटक और परिवर्तन

1.3 राजनीतिक संस्कृति का वर्गीकरण

1.3.1 आलमंड और वर्बा का वर्गीकरण

1.3.2 फाइनर का वर्गीकरण

1.4 तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक संस्कृति

1.5 राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण का आलोचनात्मक मूल्यांकन

1.6 सारांश

1.7 संदर्भ

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

तुलनात्मक अध्ययन करने और माध्यमिक समाजों के अनुभवजन्य विश्लेषण करने के लिए राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण बहुत लोकप्रिय रहा है। तुलनात्मक राजनीति के विद्वानों ने समाजशास्त्र और मानव–शास्त्र अवधारणाओं का उपयोग करके इस दृष्टिकोण को विकसित किया है । इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप निम्न में सक्षम हो जाएंगे:

- तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण की आधारभूत मान्यताओं की व्याख्या
- राजनीतिक संस्कृति के अर्थ और अवधारणा की व्याख्या

*डॉ. बोरुन डे, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ ,असम

- विभिन्न प्रकार की राजनीतिक संस्कृति को उनकी विशिष्ट विशेषताओं के साथ पहचानने में, और
- तुलनात्मक राजनीति की गतिशीलता को समझने में राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण के मूल्य का आकलन करने में ।

1.1 प्रस्तावना

सामान्य रूप से राजनीति और विशेष रूप से तुलनात्मक राजनीति समझने के लिए राजनीतिक संस्कृति बहुत महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों में से एक है। तुलनात्मक अध्ययन करने और माध्यमिक समाजों का अनुभवजन्य विश्लेषण करने के लिए यह दृष्टिकोण बहुत लोकप्रिय रहा है। विद्वानों ने राजनीतिक व्यवहार और उनकी राजनीतिक संस्कृतियों के संदर्भ में राजनीतिक प्रणालियों की प्रक्रियाओं की जांच करना पसंद किया है। दूसरे शब्दों में, लोग अपने देश की राजनीति को कैसे देखते हैं, इसका पता राजनीतिक संस्कृति द्वारा लगाया जा सकता है।

राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक दर्शन का एक विशिष्ट और असमान रूप है जिस में सरकारी, राजनीतिक और आर्थिक जीवन कैसे चलाया जा रहा है या कैसे किया जाना चाहिए, इस के बारे में संबंधित विश्वासों, मूल्यों, मानदंडों और मान्यताओं का एक समुच्चय शामिल है। इस प्रकार, राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक रूपरेखा तैयार करती है और राष्ट्रों, राज्यों और अन्य समूहों के लिए अद्वितीय है। इस प्रकार, संक्षेप में, यह दृष्टिकोण राजनीतिक विकास के विषय के समाजशास्त्रीय पहलू की जांच करता है। तुलनात्मक राजनीति के लिए संभावित रूप से एक शक्तिशाली, एकीकृत दृष्टिकोण है।

आम तौर पर, राजनीतिक संस्कृति को अपनी राजनीतिक व्यवस्था के संबंध में लोगों द्वारा साझा विचारों और नियामक निर्णयों के समूह के रूप में जाना जाता है। इसलिए इसे अक्सर सभी राजनीतिक गतिविधियों की नींव के रूप में, या कम से कम राजनीतिक गतिविधि की प्रकृति, विशेषताओं और स्तर का निर्धारण करने वाले कारक के रूप में देखा जाता है। इस कारण से, इसमें अनिवार्य रूप से ऐतिहासिक अनुभव, स्मृति, सामाजिक समुदाय और राजनीति में व्यक्ति, उनका अभिविन्यास, कौशल, राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करना शामिल हैं और इस अनुभव में मुख्य रूप से विदेशी और घरेलू नीति में प्रभावों और वरीयताओं का एक सारांश और रूपांतरित रूप होता है। यही कारण है कि यह राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण विशिष्ट अभिनेताओं, जैसे वर्तमान राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री के दृष्टिकोणों को संदर्भित नहीं करता है; बल्कि यह दर्शाता है कि लोग राजनीतिक व्यवस्था को समग्र रूप से कैसे देखते हैं, जिसमें इसकी वैधता में विश्वास भी शामिल है। आगे के अनुभागों में, आपको राजनीतिक संस्कृति की वैचारिक समझ देने का प्रयास किया गया है।

1.2 राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण: उत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, प्रकृति और वर्गीकरण

तुलनात्मक राजनीति पर साहित्य में एक पुराना तर्क यह है कि राजनीतिक संस्कृति का राजनीतिक लोकतंत्र के उद्भव पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। आंशिक रूप से,

राजनीतिक संस्कृति पर ध्यान देना राजनीति विज्ञान में व्यवहारिक क्रांति का स्वाभाविक विस्तार है और आर्थिक आधुनिकीकरण का एक उत्पाद है। आधुनिकीकरण के साथ राजनितिक व्यवस्था में व्यक्ति की भूमिका के मूल्यों में परिवर्तन आया।

राजनीतिक संस्कृति एक सरल अवधारणा है, लेकिन इसे आसानी से गलत समझा जा सकता है। यह तथ्य है कि हम किसी दिए गए राष्ट्र की संस्कृति को किसी तरह से चित्रित कर सकते हैं, हमें इसके भीतर विविध उपसंस्कृतियों के महत्व को कम कर के नहीं आंकना चाहिए। इसी प्रकार, यह तथ्य है कि राजनीतिक संस्कृति एक व्याख्यात्मक कारक हो सकती है, हमें इस संभावना को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए कि किसी देश के भीतर वस्तुनिष्ठ स्थितियां अक्सर संस्कृति के लिए जिम्मेदार व्यवहार के लिए उत्तरदायी हो सकती हैं।

हम राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन करते हैं क्योंकि यह हमें राजनीतिक जीवन को समझने में सहायता करती है। उदाहरण के लिए, स्विट्जरलैंड में विभिन्न नृजातीय समूह यथोचित सहयोग क्यों करते हैं लेकिन बोस्निया या लेबनान में नहीं? एक सर्व–शक्तिशाली राजनीतिक नेता का समर्थन करने के लिए रूसी कनाडाई लोगो की तुलना में अधिक इच्छुक क्यों है? मेक्सिको में राजनितिक भ्रष्टाचार एक गंभीर और लंबे समय से चली आ रही समस्या क्यों है लेकिन चिली में नहीं? राजनीतिक संस्कृति कम से कम आंशिक उत्तर दे सकती है (एथ्रिज मार्क्स, हावर्ड हैंडेलमैन, 2010)। राजनीतिक संस्कृति शब्द को परिभाषित करना अत्यंत कठिन है। यह एक ही समय में समवेशी और व्यापक है। राजनीति विज्ञान के मौजूदा साहित्य में, राजनीतिक संस्कृति को कई तरह से परिभाषित किया गया है लेकिन अनिवार्य रूप से इसमें राजनीति के बारे में आधारभूत मूल्य, विचार, विश्वास, दृष्टिकोण और अभिविन्यास शामिल है। इसमें सही और गलत, अच्छे और बुरे के मुद्दे तथा राजनीति में क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं भी शामिल हैं। राजनीतिक संस्कृति की गतिशीलता को समझने के लिए,'संस्कृति' शब्द का अर्थ से आरंभ करना उपयोगी होगा। संस्कृति शब्द के कई अलग–अलग अर्थ हैं और यह उन सभी चीजों को प्रभावित करता है जो लोग अपने समाज में करते हैं। कल्चर शब्द की व्युत्पत्ति जर्मन शब्द "कल्तूर" से हुई है । कल्चर एक समाज के ज्ञानोदय के विशिष्ट उच्च मूल्यों को इंगित करता है। इस प्रकार संस्कृति को "प्रकृति पर मनुष्य के प्रभाव " के रूप में परिभाषित किया गया था (क्रोबर, अल्फ्रेड और क्लखोन, 1952)।

'संस्कृति' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम एडवर्ड बी. टेलर द्वारा अपनी पुस्तक, प्रिमीटिव कल्चर (1871) में किया गया था, जो अग्रणी अंग्रेज मानवशास्त्री थे। टेलर ने संस्कृति शब्द का प्रयोग सार्वभौमिक मानव क्षमता के संदर्भ में किया। यह संपूर्ण रूप से जटिल है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नीति, नैतिकता, कानून, परंपराएं, लक्षण, प्रथा और समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य क्षमताएं और आदतें शामिल हैं। संस्कृति जीवित रहने के लिए शक्तिशाली मानव उपकरण है, लेकिन यह एक नाजुक घटना है। यह लगातार बदल रही है और आसानी से लुप्त हो गई है क्योंकि यह केवल एक विचार में मौजूद है। इस प्रकार संस्कृति सामाजिक विषयों के प्रति समाज के लोगों के साझा मनोवैज्ञानिक अभिविन्यास का प्रतिनिधित्व करती है। एक समाज के लोग अधिक या कम सामाजिक विषयों के प्रति झुकाव का अलग स्वरूप प्राप्त करते हैं और बनाते हैं। यह वास्तव में समाज के लोगों की संस्कृति या 'सामाजिक संस्कृति' है और 'राजनीतिक संस्कृति' इस सामाजिक संस्कृति का एक अलग हिस्सा है।

राजनीतिक संस्कृति के दृष्टिकोण को 1960 के दशक में राजनीतिक विश्लेषण में व्यवहारिक दृष्टिकोण की उपज में एक प्राकृतिक विकास के रूप में देखा जा सकता है। अधिक विशेष रूप से यह अवधारणा सूक्ष्म–विश्लेषण और मैक्रो–विश्लेषण के स्तर के बीच व्यवहारिक दृष्टिकोण में बढ़ते अंतर को समाप्त करने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विकसित की गई थी। यह लोगों द्वारा धारित दृष्टिकोणों और प्रथाओं का एक समुच्चय है जो उनके राजनीतिक व्यवहार को आकार देता है जिस में नैतिक निर्णय, राजनीतिक मिथक, विश्वास और विचार शामिल हैं जो एक अच्छे समाज का निर्माण करता है (ए आर बॉल, 1971)। यह सरकार का प्रतिबिंब है, लेकिन इसमें इतिहास और परंपरा के ऐसे तत्व भी शामिल हैं जो वर्तमान शासन की भविष्यवाणी कर सकते हैं। इसे महत्वपूर्ण कहा जाता है क्योंकि यह लोगों की राजनीतिक धारणाओं और कार्यों को आकार देता है। यह राजनीतिक विचारधारा, राष्ट्रीय लोकाचार और भावना, राष्ट्रीय राजनीतिक मनोविज्ञान, लोगो के मौलिक मूल्यों आदि की अवधारणा से जुड़ा है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन दोनों लोकतंत्र रहे हैं, लेकिन प्रत्येक की एक विशिष्ट राजनीतिक संस्कृति है। अमेरिकी सरकार एक लिखित संविधान से अपनी शक्ति प्राप्त करता है और इसके पास दो राजनीतिकों दलों का प्रभुत्व है। इसके विपरीत, ब्रिटेन में राजशाही का एक लंबा इतिहास रहा है और इसका कभी कोई लिखित संविधान नहीं रहा है।

राजनीतिक संस्कृति और राजनीतिक व्यवस्था के बीच घनिष्ठ संबंध है। राजनीतिक संस्कृ ति सभी पुरानी और आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाओं के अस्तित्व का आधार है। एक राजनीतिक समुदाय, 'राज्य' के बिना भी, एक राजनीति या राजनीतिक व्यवस्था के रूप में अस्तित्व में रह सकता है। राजनीतिक व्यवस्था का कोई भी रूप हो –विकासशील या विकसित, इसमें राजनीतिक संस्कृति का कोई न कोई रूप या स्वरूप होता है। संयुक्त राष्ट्र संगठन जैसी राज्यविहीन राजनीतिक प्रणालियाँ, कई अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठन कम या अधिक किसी न किसी राजनीतिक संस्कृति की कुछ शैली के आधार पर कार्य कर रहे हैं।

1.2.1 राजनीतिक संस्कृति की परिभाषाः

विभिन्न विद्वानों द्वारा राजनीतिक संस्कृति की कई परिभाषाएँ दी गई हैं जिनका संबंध विभिन्न दृष्टिकोणों से है। सामाजिक विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोश राजनीतिक संस्कृति को परिभाषित करता है "दृष्टिकोण, विश्वास और भावनाओं का समूह जो एक राजनीतिक प्रक्रिया के लिए आदेश और अर्थ देता है" और जो अंतर्निहित धारणाएँ और नियम प्रदान करता है जो राजनीतिक व्यवस्था में व्यवहार को नियंत्रित करता हैं।" 1963 में गेब्रियल ए आलमंड और सिडनी वर्बा ने कहा कि राजनीतिक संस्कृति विशेष रूप से राजनीतिक व्यवस्था और इसके विभिन्न भागों के प्रति राजनीतिक झुकाव और दृष्टिकोण और प्रणाली में स्वयं की भूमिका के प्रति दृष्टिकोण को संदर्भित करती है।

सिडनी वर्बा ने राजनीतिक संस्कृति को "राजनीतिक संपर्क और राजनीतिक संस्थानों के स्वरूप के बारे में विश्वासों की प्रणाली" के रूप में परिभाषित किया हैं और वे विश्वास मौलिक है। आमतौर पर अस्थिर, और अपरिवर्तनीय, धारणाएं या अभिधारणाएं राजनीति के बारे में है। उन्होंने बाद के राजनीतिक संस्कृति अध्ययनो के लिए राजनीतिक संस्कृति का एक सूचक मापदंड भी स्थापित किया जो इसे अन्य विशिष्ट राजनीतिक मनोवैज्ञानिक निर्माणों जैसे कि पक्षपातपूर्ण संबद्धता और दृष्टिकोण या घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय नीतिगत

मुद्दों के बारे में विश्वास से अलग करता है। इसके अतिरिक्त, आलमंड और वर्बा ने राजनीतिक संस्कृति के पांच महत्वपूर्ण आयामों की पहचान की है जो हैं:

(क) राष्ट्रीय पहचान की भावना

(ख) राजनीतिक जीवन में एक भागीदार के रूप में स्वयं के प्रति दृष्टिकोण

(ग) अपने साथी नागरिकों के प्रति दृष्टिकोण

(घ) सरकारी उत्पादन और प्रदर्शन के संबंध में दृष्टिकोण और अपेक्षाएं तथा,

(ड़) निर्णय निर्माण की राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में ज्ञान के प्रति दृष्टिकोण।

पैट्रिक ओ' नील ने समाज में राजनीतिक संस्कृति को राजनीतिक गतिविधि के मानदंडों के रूप में परिभाषित किया है। यह एक निर्धारण कारक है जिसमें राजनीतिक शासन की विचारधाराएं देश पर हावी होंगी। यह किसी दिए गए देश या लोगों के समूह के लिए अनोखा है। एंड्रयू हेवुड कहते हैं कि राजनीतिक संस्कृति लोगों का मनोवैज्ञानिक अभिविन्यास है। इसका तात्पर्य राजनीतिक विषयों जैसे कि विश्वासों, प्रतीकों और मूल्यों में व्यक्त सरकारें और संविधान दलों के लिए अभिविन्यास का एक स्वरूप है।

दूसरी ओर, रॉबर्ट ए डाहल एक राय देते हैं कि राजनीतिक संस्कृति कारक के रूप में राजनीतिक विरोध के विभिन्न स्वरूपों की व्याख्या करता है जिसके प्रमुख तत्व हैं:

- समस्या–समाधान का उन्मुखीकरण
- सामूहिक कार्यों के लिए उन्मुखीकरण
- राजनीतिक व्यवस्था के लिए उन्मुखीकरण और
- अन्य लोगों के लिए उन्मुखीकरण (डाहल, 1971)।

आलमंड और पॉवेल (1966) ने राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा को राजनीतिक व्यवहार की व्याख्या में चर के रूप में माना है। यह राजनीतिक अभिविन्यास राजनीतिक प्रणाली और इसके विभिन्न भागों के प्रति दृष्टिकोण और इसकी प्रणाली में स्वयं की भूमिका के प्रति दृष्टिकोण का एक विशेष स्वरूप है (आलमंड और पॉवेल, 1966)। वे इसे तीन दिशाओं में विस्तृत करते हैं:

- मूल सामग्रीः इस की व्यवस्थित संस्कृति, प्रक्रिया संस्कृति और नीति संस्कृति के रूप में व्याख्या की जा सकती है।
- अभिविन्यास की किस्में (संज्ञानात्मक, भावात्मक और मूल्यांकनात्मक)
- इन घटकों के बीच व्यवस्थित संबंध।

लुसियन पाइ (1965) के अनुसार, राजनीतिक संस्कृति में ऐसे गुण शामिल होते हैं जिनमें व्यवहार, भावनाएं, विश्वास और मूल्य शामिल हैं: जो राजनीति की प्रकृति से संबंधित है और जो राजनीति प्रक्रियाओं को रूप और सार प्रदान करती है।

उपरोक्त से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति भावनात्मक और व्यवहारिक वातावरण को निरूपित करने के लिए एक आशुलिपि अभिव्यक्ति है जिसके भीतर राजनीतिक प्रणाली संचालित होती है। इस प्रक्रिया में, राजनीतिक विश्वासों, मूल्यों

और दृष्टिकोणों का एक समूह लोगों के राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करता है और उनके राजनीतिक व्यवहार तब एक स्वरूप और उनकी राजनीतिक संस्कृति बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में, यह राजनीतिक विषयों के लिए नागरिकों के उन्मुखीकरण का समस्त वितरण है। यह किसी दी गई राजनीतिक प्रणाली की बहुत ही राजनीतिक प्रक्रियाओं की छाप देता है। इस प्रकार, राजनीतिक संस्कृति के इस दृष्टिकोण का उपयोग एक राजनीतिक व्यवस्था को दूसरे से अलग करने के लिए किया जा सकता है। इसलिए, तुलनात्मक राजनीति के विभिन्न आयामों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है।

1.2.2 राजनीतिक संस्कृति के घटक और परिवर्तन

राजनीतिक संस्कृति तुलनात्मक राजनीति के लिए एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण है जो प्रकृति में समवेशी है। यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि राजनीतिक संस्कृति की बौद्धिक पुरातनता का पता प्राचीन काल से लगाया जा सकता है। इसके तत्काल पूर्ववृत्त मोंटेस्क्यू (1689–1755), जोहान गॉटफ्राइड हर्बर (1744–1803) और एलेक्सिस डी टोकेविल (1805–59) हो सकते हैं। आधुनिक तुलनात्मक राजनीति में इसकी उत्पत्ति का पता आलमंड के 1956 के प्राथमिक लेखन " कम्पेरेटिव पॉलिटिकल सिस्टम" से लगाया जा सकता है। बाद में, राजनीतिक संस्कृति अनुसंधान ने राजनीतिक विज्ञान के उप–क्षेत्र के रूप में शुरुआत की और 1963 में आलमंड और वर्बा ने "द सिविक कल्चर" प्रकाशित किया, जो एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन है और राजनीतिक स्थिरता और लोकतंत्र के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है। निःसंदेह रूप से इसने एंग्लो–अमेरिकन प्रतिनिधि सरकार का जश्न मनाया गया। यह राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण का एक प्रमुख कार्य भी बन गया। तब से, इस दृष्टिकोण ने तुलनात्मक राजनीति में गति प्राप्त की ।

1950 और 1960 के दशक के दौरान इस अवधारणा का उदय सामाजिक विज्ञानं और इतिहास में व्याख्यात्मक प्रमुखता के लिए संस्कृति के अधिक सामान्य उदगम का हिस्सा था। प्रारंभ में, राजनीतिक वैज्ञानिक विभिन्न राष्ट्रों की राजनीतिक संस्कृतियों के बीच भिन्नताओं को मापने की संभावना से उत्साहित थे। लेकिन उन्होंने अंततः 'कुलीन राजनीतिक संस्कृति', 'नृजातीय राजनीतिक संस्कृति' आदि जैसी संस्थाओं के अध्ययन की ओर रुख किया । 1966 में, एलाजार ने प्रस्तावित किया कि प्रत्येक अमेरिकी राज्य में तीन प्रकार की राजनीतिक संस्कृति–व्यक्तिवादी, परंपरावादी या नैतिकतावादी में से एक संस्कृति शामिल है जिससे राज्य राजनीतिक संस्कृति के अध्ययन ने सरकारी गतिविधियों, प्रशासनिक लक्ष्यों, नवीन क्षमता, चुनाव में लोकप्रिय भागीदारी और दल प्रतियोगिता में राज्यों के बीच भिन्नताओं की जांच की (फॉर्मिसानो, 2001)।

1970 के दशक में देखा गया कि राजनीतिक संस्कृति साहित्य में नियामक पक्षपात निहित है कि सांस्कृतिक प्रतीकों को समाज में सभी या अधिकांश अभिनेताओं द्वारा गहराई से आकार दिया जाता है, इस प्रकार स्थिरता और एक रूढ़िवादी विचारधारा को बढ़ावा मिलता है।

यह धारणा कि राजनीतिक संस्कृति के अध्ययन ने यथास्थिति को विशेषाधिकार प्रदान करने की प्रवृति को बढ़ाया, यह दृष्टिकोण मार्क्सवादी और तर्कसंगत विकल्प दृष्टिकोणों के उदय के बीच मजबूत हुआ। जबकि राजनीतिक संस्कृति की कारण संबंधी प्रभावकारिता के लिए एक मजबूत तर्क के साथ एकस्टीन और इंगलहार्ड ने आलमंड और वर्बा के क्रम का बचाव किया और तर्क दिया कि विभिन्न समाज स्थायी सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को अपनाते

है जिनके महत्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक परिणाम होतें है, आगामी पुस्तक में उन्होंने कहा कि उत्तर–आधुनिकतावादी समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन प्रारंभिक काल के औद्योगीकरण की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण था (एकस्टीन, 1988)। इस तरह ,राजनीतिक संस्कृति के इस दृष्टिकोण की प्रभावशीलता के बारे में अलग–अलग मत हैं।

दूसरी ओर, समग्र रूप से राजनीतिक संस्कृति के साथ–साथ कुलीन वर्ग की राजनीतिक संस्कृति है जिसमें उन लोगों द्वारा, जो राजनीतिक सत्ता के केंद्रों के सबसे निकट हैं और आयोजित राजनीति के बारे में विश्वास, दृष्टिकोण और विचार शामिल हैं। अभिजात वर्ग के मूल्य बड़े पैमाने पर जनसंख्या की तुलना में अधिक सुसंगत और परिणामी हैं। यधपि, राजनीतिक संस्कृति के अधिकांश अध्ययन राज्य के भीतर इसकी गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वैश्विक राजनीतिक संस्कृति का महत्व यहाँ ध्यान देने योग्य है। वैश्विक राजनीतिक संस्कृति के व्यापक पहलुओं को समझने के लिए समस्त विश्व की सीमा को वृहद दृष्टिकोण से देखा जाता है। उदाहरण के लिए, सैमुअल पी हंटिंगटन ने अपने श्रेष्ठ कार्य "द क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन" में राजनीतिक संस्कृति के विश्लेषण को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र पर केंद्रित किया है। लेकिन वैश्विक राजनीतिक संस्कृति मुख्य रूप से एक पश्चिमी उत्पाद हो सकती है।

उपरोक्त से, यह समझा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति के दृष्टिकोण को विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग–अलग रूप में देखा गया है। एक प्रणाली की राजनीतिक संस्कृति कई कारकों का परिणाम है। समय की अवधि में ये कारक राजनीतिक संस्कृति को आकार देते हैं या नयी आकृति प्रदान करते हैं। नीचे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण घटक सूचीबद्ध हैं।

- राजनीतिक विश्वास और मूल्य
- राजनीतिक प्रक्रिया
- संपूर्ण प्रणाली और विभिन्न एजेंसियों को शामिल करते हुए निर्णय लेना जिसमें दल प्रणाली, दबाव समूह आदि शामिल हैं।
- प्रतीक
- राजनीतिक कार्रवाई
- अभिविन्यास
  - संज्ञानात्मक अभिविन्यास – ज्ञान, यथार्थ या अन्यथा ,राजनीति प्रणाली,
  - प्रभावशाली अभिविन्यास – लगाव की भावनाओं, भागीदारी, अस्वीकृति, और राजनीतिक विषयों के समान, और
  - मूल्यांकनात्मक अभिविन्यास– राजनीतिक विषयों के बारे में निर्णय और विचार जिस में आमतौर पर राजनीतिक विषयों और घटनाओं के लिए मानक मूल्य लागू करना शामिल है
- परंपरा और आधुनिकता
- संस्कृतिवाद
- सामाजिक संरचना

- भूगोल
- नृजातीय वास्तविकताएं या मतभेद
- राज्य की भूमिका
- विचारधारा
- राज्य का इतिहास
- सामाजिक–आर्थिक संरचना
- शासन का रूप
- कुलीन वर्ग की भूमिका

बोध प्रश्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की जाँच करें।

1) राजनीतिक संस्कृति को परिभाषित करें ?

....
....
....
....
....
....
....

2) कुलीन राजनीतिक संस्कृति क्या है ?

....
....
....
....
....

1.3 राजनीतिक संस्कृति का वर्गीकरण

विभिन्न विद्वानों द्वारा उनके शोध अध्ययनों के आधार पर प्रस्तुत राजनीतिक संस्कृति के विभिन्न प्रकार प्रस्तुत किये गए हैं। इनमें से कुछ प्रकारों की समझ हमे विभिन्न प्रणालियों की राजनीतिक संस्कृति में अंतर करने में हमारी सहायता करेगी। आईये, हम राजनीतिक संस्कृति के वर्गीकरण की जांच करें। जिस में दो प्रमुख राजनीतिक अध्ययन किए गए, एक गेब्रियल ए आलमंड और सिडनी वर्बा द्वारा और दूसरा सैमुअल ई फाइनर द्वारा।

1.3.1 आलमंड और वर्बा का वर्गीकरण

आलमंड और वर्बा (1963) द्वारा सिविक कल्चर संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी, इटली और मैक्सिको में 1959–60 के दौरान किए गए उनके सर्वेक्षणों पर आधारित है। उपक्षेत्र के रूप में राजनीतिक संस्कृति के अध्ययन का संचालन करने वाले इस अध्ययन ने तीन शुद्ध प्रकार की राजनीतिक संस्कृति की पहचान की। ये इस प्रकार हैं:

1) संकीर्ण राजनीतिक संस्कृतिः यह उस राजनीतिक संस्कृति को संदर्भित करता है जहां नागरिक केवल केंद्र सरकार के अस्तित्व के बारे में दूर से ही जानते हैं– जैसे कि दूरस्थ जनजातियाँ जिनका अस्तित्व केन्द्रीय सरकार द्वारा लिए गए राष्ट्रीय निर्णयों से अप्रभावित प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक विषयों के प्रति कोई राजनीतिक अभिविन्यास नहीं है। लोगों को न तो ज्ञान है और न ही राजनीति में रुचि।

राजनीति के सभी घटकों के प्रति उनका कोई झुकाव नहीं है। इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति पारंपरिक राजनीतिक संरचना के अनुकूल है। इस प्रकार का अभिविन्यास एक निष्क्रिय समाज में पाया जाता है जहां भूमिकाओं की शायद ही कोई विशेषज्ञता होती है, और इसलिए, लोग सरकारी प्राधिकरण के प्रति उदासीन होते हैं। इस प्रकार, राजनीतिक संस्कृति में लोगों की जागरूकता, अपेक्षाएं और भागीदारी कम होती है।

(2) प्रजा राजनीतिक संस्कृतिः इस राजनीतिक संस्कृति में नागरिक स्वयं को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने वालों के रूप में नहीं बल्कि सरकार की प्रजा के रूप में देखते हैं–जैसे कि एक तानाशाही के तहत रहने वाले लोगों के साथ। दूसरे शब्दों में, इस राजनीतिक संस्कृति के तहत नागरिक का राजनीतिक व्यवस्था की ओर एक निष्क्रिय झुकाव होता है और वे स्वयं को राजनीतिक प्रक्रिया पर न्यूनतम प्रभाव के रूप में मानते है। इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति में नागरिक केंद्र सरकार से अवगत होते हैं, और असहमति के लिए बहुत कम गुंजाइश के साथ अपने फैसलों के अधीन हैं। व्यक्ति राजनीति, उसके अभिनेताओं और संस्थानों से अवगत होता हैं। प्रणाली के उत्पादन पहलुओं की ओर नागरिकों का झुकाव होता है। लोग निर्णय लेने के तंत्र के बारे में जानते हैं। एक राजनीतिक जागरूकता है, लेकिन राजनीतिक विचारों को हवा देने का साहस नहीं है, इस प्रकार भागीदारी मानदंडों का अभाव है। इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति एक केंद्रीकृत सत्तावादी संरचना के अनुकूल है। इस मॉडल में, जागरूकता और अपेक्षाएं अधिक होती है। लेकिन भागीदारी कम होती है।

(3) प्रतिभागी राजनीतिक संस्कृतिः इस राजनीतिक संस्कृति में नागरिकों का मानना है कि वे व्यवस्था में योगदान दे सकते हैं और वे इससे प्रभावित होते हैं। इसलिए, वे सभी राजनीतिक उद्देश्यों के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया देतें है और राजनीतिक गतिविधियों के लिए एक सक्रिय अभिविन्यास रखते है। यहां नागरिक विभिन्न तरीकों से सरकार को प्रभावित कर सकते हैं और वे इससे प्रभावित होते हैं। व्यक्ति राजनीति के सभी चार घटको, अर्थात निवेश, उत्पादन, राजनीतिक प्रणाली और स्व–भूमिका प्रणाली की ओर उन्मुख होता है। यह अधिक से अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और भागीदारी का सबसे अधिक मूल्य है। राजनीतिक प्रणाली की ओर प्राधिकरण की आलोचना करने और सकारात्मक अभिविन्यास रखने की क्षमता है। इस मॉडल में, लोगों में उच्च स्तर की जागरूकता, अपेक्षाएं और भागीदारी होती है।

आलमंड और वर्बा का तर्क है कि कभी भी केवल एक राजनीतिक संस्कृति नहीं होती है। राजनीतिक अभिविन्यास की तीन श्रेणियां, जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है, वे हमेशा शुद्ध रूप में मौजूद नहीं होती हैं; बल्कि वे राजनीतिक संस्कृति की कई स्थितियों में परस्पर जुड़े हुए हैं। इस प्रकार, उन्होंने राजनीतिक संस्कृति को तीन उप–प्रकारों में पुनः वर्गीकृत किया। इनकी चर्चा नीचे की गई है।

(1) संकीर्ण और प्रजाः इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति संकीर्ण अभिविन्यास से प्रजा अभिविन्यास में एक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। यहाँ संकीर्ण निष्ठाएँ धीरे–धीरे क्षीण होती जाती हैं और निवासियों में केंद्रीय सत्ता के बारे में अधिक जागरूकता विकसित होती है।

(2) प्रजा और प्रतिभागीः इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति प्रजा राजनीतिक अभिविन्यास से प्रतिभागी राजनीतिक अभिविन्यास तक एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है। ऐसी राजनीतिक संस्कृति में, आम तौर पर लोग एक ओर एक सक्रिय प्रवृत्ति विकसित करते हैं और इस प्रक्रिया में भाग लेते है; लेकिन दूसरी ओर, ऐसे व्यक्ति भी हैं जो निष्क्रिय झुकाव रखते हैं और निर्णय लेने की प्रक्रिया प्राप्त करने के अंतिम छोर पर बने रहते हैं।

(3) संकीर्ण और सहभागीः इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति व्यक्तियों में संकीर्ण अभिविन्यास का प्रतिनिधित्व करती है जबकि शुरू किए गए मानदंडों में प्रतिभागी राजनीतिक अभिविन्यास की आवश्यकता होती है । इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति में राजनीतिक संस्कृति और राजनीतिक आदर्श के बीच सामंजस्य की समस्या उभर कर सामने आती है। हालाँकि, आलमंड और वर्बा सुझाव देते हैं कि एक सहभागी राजनीतिक संस्कृति एक उदार लोकतांत्रिक शासन के लिए उपयुक्त है। सहभागी राजनीतिक संस्कृति एक प्रकार की ऐसी राजनीतिक संस्कृति है जो एक लोकतांत्रिक राजनीतिक संरचना के अनुरूप है और उसी को उनके द्वारा "नागरिक संस्कृति" बुलाया गया है।

1.3.2 फाइनर का वर्गीकरण

विकासशील देशों की, राजनीति में सैन्य हस्तक्षेप की परिघटना को समझने का प्रयास करते हुए, सैमुअल ई फाइनर (द मैन ऑन द हॉर्सबैक, 1962) ने नागरिक–सैन्य संबंधों को राजनीतिक संस्कृति के साथ जोड़ा। उनके विश्लेषण में, राजनीतिक संस्कृति के चार स्तर हैं।

(1) परिपक्व राजनीतिक संस्कृतिः इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति में सत्ता के हस्तांतरण की प्रक्रिया की व्यापक सार्वजनिक स्वीकृति होती है; एक विश्वास हैं कि सत्ता में बैठे व्यक्तियों को शासन करने और आदेश जारी करने का अधिकार है; लोग राजनीतिक संस्थानों से जुड़े हुए है और एक अच्छी तरह से संगठित जनमत है।

(2) विकसित राजनीतिक संस्कृतिः इस प्रकार की राजनीतिक संस्कृति में, नागरिक संस्थान अत्यधिक विकसित होते हैं और जनता शक्तिशाली रूप में अच्छी तरह संगठित होती है लेकिन समय–समय पर इस प्रश्न पर विवाद पैदा होता है कि संप्रभु प्राधिकरण का गठन किसे और क्या करना चाहिए और सत्ता का हस्तांतरण कैसे किया जाना चाहिए।

(3) निम्न राजनीतिक संस्कृतिः राजनीतिक संस्कृति के इस स्तर पर, राजनीतिक व्यवस्था कमजोर और संकीर्ण रूप से संगठित होती है; राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति पर आम

सहमति की कमी है। और राजनीतिक प्रणाली के लिए प्रक्रियाएं और सार्वजनिक अनुराग भंगुर है।

(4) न्यूनतम राजनीतिक संस्कृतिः राजनीतिक संस्कृति के इस निम्न स्तर पर, राजनीतिक प्रणाली में स्पष्ट जनमत मौजूद नहीं है और सरकार जनमत को आसानी से अनदेखा कर सकती है; राजनीतिक संस्कृतियां बल या धमकी से तय होती हैं। एक व्यक्ति या संस्था जो स्वयं को मुखर करने में सक्षम है, वह अपनी इच्छा को बल प्रदान कर सकता है और किसी के अधिकार की सीमा सीधे उसके निपटान में बल के स्तर से संबंधित होती है। फाइनर ने तर्क दिया कि कमजोर वैधता वाले विकासशील देश बलात राज्य परिवर्तन या सैन्य हस्तक्षेप के चरम रूपों का अनुभव कर सकते हैं।

1.4 तुलनात्मक दृष्टिकोण में राजनीतिक संस्कृति

गेब्रियल ए. आलमंड के राजनीतिक संस्कृति के वर्गीकरण और विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों में इसके लागू कारकों को उनके विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया हैं। आलमंड के अनुसार राजनीतिक प्रणाली का चौगुना वर्गीकरण कुछ शर्तों पर आधारित है और ये हैं:

- सबसे पहले, एक राजनीतिक प्रणाली कार्रवाई की एक प्रणाली है।
- राजनीतिक प्रणाली की इकाई भूमिका है।
- राजनीतिक प्रणाली की विशिष्ट संपत्ति किसी दिए गए क्षेत्र और जनसंख्या पर शारीरिक बल प्रयोग का वैध एकाधिकार है।
- चौथी अवधारणा राजनीतिक कार्रवाई की ओर उन्मुखीकरण है। राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति के समान नहीं है, हालांकि यह इससे संबंधित है।

अब, यहाँ राजनीतिक प्रणाली और संबंधित संस्कृति के बारे में आलमंड के वर्गीकरणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

1) एंग्लो–अमेरिकन राजनीतिक व्यवस्थाः पश्चिम के उन्नत देशों से जुडी, यहां तक कि इसे परिपक्व राजनीतिक संस्कृति के रूप में भी कहा जाता है, इसमें राजनीतिक सर्वसम्मति और संगठन का उच्च स्तर शामिल है। यह संचालन प्रणाली है जो मानदंड के रूप में कार्य करती है जिसे अन्य राष्ट्रीयताओं द्वारा उधार लिया जा रहा है। इस प्रणाली की राजनीतिक संस्कृति सजातीय, धर्मनिरपेक्ष होती है।

- एक बहु–मूल्यवान, तर्कसंगत–गणना, सौदेबाजी और प्रयोगात्मक राजनीतिक संस्कृति। यह इस अर्थ में एक सजातीय संस्कृति है कि राजनीतिक उद्देश्यों की सांझेदारी होती है – स्वतंत्रता, जन कल्याण, और सुरक्षा के मूल्य– और साधन।
- एक धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक प्रणाली में विभिन्न भूमिकाओं के बीच व्यक्तित्व और स्वायत्तता का एक उपाय शामिल है। इसलिए बोलने के लिए, प्रत्येक भूमिका राजनीतिक व्यवसाय में स्वायत्तता से स्वयं को स्थापित करती है। राजनीतिक प्रणाली बाजार के माहौल से संतृप्त है। धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक प्रक्रिया में प्रयोगशाला की कुछ विशेषताएं होती हैं; अर्थात, उम्मीदवारों द्वारा प्रस्तुत की गई नीतियों को परिकल्पना के रूप में देखा जाता है, और कानून के परिणामो को

प्रणाली के भीतर तेजी से संप्रेषित किया जाता हैं और परीक्षण परिकल्पना का कच्चा रूप बनता हैं।

- **प्रणाली के मूल सिद्धांतः** स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र, नागरिक कर्तव्य, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, ट्रेड यूनियनवाद, आदि। सौदेबाजी की राजनीतिः शासकों और शासन के बीच (निर्वाचित और निर्वाचक, नेता और उसके अनुयायी)
- **बहुल समाज–** समाज विषम है और इसलिए विभिन्न दल और रुचि समूह अपने संबंधित हितों की प्रतिक्रिया में निर्णय निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए कार्य करते हैं।
- **नियंत्रण और संतुलन**– जहां शक्ति और प्रभाव का प्रसार होता है जनसंचार और जन शिक्षा के चैनलों द्वारा कानूनी संस्थानों की जाँच की जाती है ताकि सत्तावादी शासन की संभावना को कम किया जा सके, यहाँ तक कि समाप्त भी किया जा सके।
- शक्ति का पृथक्करण और विभेदित भूमिकाओं की स्थिरता।
- राजनीतिक विचारधाराएँ – बहुसंस्कृतिवाद, उदारवाद, कल्याणकारी राज्य।
- उपयोगितावाद, व्यक्तिवाद, समतावाद आदि।
- राजनीतिक लोककथाएं– प्रतीक का प्रयोग।
- नागरिक वर्चस्व।

2) महाद्वीपीय यूरोपीय राजनीतिक व्यवस्था– ये यूरोप के पश्चिमी देश हैं जैसे इटली, फ्रांस और नॉर्वे आदि। इसे विकसित राजनीतिक संस्कृति भी माना जाता है क्योंकि इन समाजों में जनता अत्यधिक संगठित है।

- **खंडित राजनीतिक संस्कृति–** राजनीतिक संस्कृति खंडित है जहां समाज के विभिन्न वर्ग सांस्कृतिक विकास के विभिन्न स्वरूप स्थापित करते हैं, जबकि कुछ दूसरों की तुलना में अधिक विकसित होते हैं। इस प्रकार ,राजनीतिक संस्कृति विशिष्ट उप–संस्कृतियों को शामिल करती है।
- **कोई राजनीतिक सौदेबाजी नहीं**– राजनीतिक सौदेबाजी की प्रक्रिया वस्तुतः न के बराबर होती है जो ऐसी स्थिति पैदा करती है जिसमें राजनीति एक खेल जैसी हो जाती है। परिणाम यह है कि विभिन्न उप–संस्कृतियां युद्ध में हैं। यह श्रेष्ठता और शक्ति की एक दौड़ है।
- **अपेक्षित मानदंड–** लोकतंत्र की गारंटी देने वाली संस्थाओं की स्थिरता, कानून का शासन, मानवाधिकार, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा आदि।
- **शासन का रूप–** यह राजतंत्रवाद, गणतंत्रवाद, राष्ट्रपति, अर्ध–राष्ट्रपति, संसदीय गणतंत्र, आदि दोनों को आत्मसात करता है। उदाहरण के लिए, बेल्जियम, नीदरलैंड, स्वीडन और स्पेन आदि में संवैधानिक राजतंत्र हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय संगठन का गठनः** उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ।
- संस्थाओं की वैधता।

- नागरिक सरकार।

3) विकासशील देश राजनीतिक व्यवस्था– इस श्रेणी में वे देश शामिल हैं जो लंबे औपनिवेशिक प्रभुत्व के दिनों से उभरे हैं।

- मालिक और प्रजा– मालिक की राजनीतिक संस्कृति प्रजा की राजनीतिक संस्कृति पर आरोपित होती है। राजनीतिक संस्कृति और शासकों की राजनितिक संस्कृति का अति अधिरोपण परिणाम का विघटन है जिसे सभी मामलों में श्रेष्ठ माना जाता है।
- समय के साथ नियम द्वारा वैधता का नया स्रोत।
- एकल संरचना बहुभिन्नरूपी राजनीतिक संस्कृति।
- इतिहास की समानता।
- मतदान के अधिकार और शासन में लोगों को भागीदारी प्रदान करने के द्वारा विषय की प्रधानता।
- कृषि–औद्योगिक जुड़े समाज।

4) एकदलीय राजनीतिक प्रणाली– यहाँ शामिल देश सोवियत संघ और चीन हैं।

- केंद्र की वैधताः वैधता की स्वीकृति का गुण कृत्रिम रूप से निर्मित होता है। प्राधिकरण के लिए विशिष्ट अभिविन्यास केंद्रीय नियंत्रण या संचार के साधनो और हिंसा की एजेंसियों द्वारा निर्मित अनुरूपता या उदासीनता का कुछ संयोजन होता है।
- शक्ति का केंद्रीकरण।
- अधिकारी वर्ग, पुलिस और सेना का पदानुक्रम।
- प्राधिकरण द्वारा दबाव का प्रयोग।
- सांस्कृतिक विकास का एकल स्वरूप।
- एकात्मक प्रणाली।
- कम लोगों की भागीदारी।

अतः उपरोक्त से स्पष्ट है कि विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं में बुनियादी कारकों के आधार पर राजनीतिक संस्कृति के विभिन्न समूह होते हैं जैसे कि पहले चर्चा की गई है।

1.5 राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण का आलोचनात्मक मूल्यांकन

राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण, कुछ विद्वानों के लिए, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में कभी भी अंतिम शब्द नहीं हो सकता है लेकिन, सावधानी से संभाला जा सकता है, (उनके लिए) यह एक उपयोगी स्प्रिंगबोर्ड हो सकता है। किसी भी अन्य दृष्टिकोण की तरह, तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए एक दृष्टिकोण के रूप में राजनीतिक संस्कृति

के अपने फायदे और नुकसान दोनों हैं। यहाँ विभिन्न विद्वानों द्वारा इंगित राजनीतिक संस्कृति के दृष्टिकोण की कुछ शक्तियों और कमियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

तुलनात्मक राजनीति के इस दृष्टिकोण के विरूद्ध महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि इसे आधुनिक राजनीतिक प्रणाली के रूपात्मक अध्ययन में प्रस्तुत करने के लिए एक बहुत ही सटीक चर के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण को व्यक्तिगत व्यवहार के सही मापक के रूप में नहीं लिया जा सकता क्योंकि यह बहुत ही विशिष्ट और विविध प्रकृति का है। लूसियन पाई ने इस दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए कहा कि किसी भी समाज में शासकों की संस्कृति और जनता की संस्कृति के बीच मौलिक अंतर नहीं है। इसलिए, उन्हें अलग करने का कोई भी प्रयास कोई उत्पादक परिणाम नहीं ला सकता है।कुछ अन्य लोगों का तर्क है कि यह दृष्टिकोण अस्पष्ट है। राजनीतिक संस्कृति अपने आप में सामान्य रूप से संस्कृति की एक उपप्रणाली है। वास्तव में, राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण आधुनिकीकरण और विकास सिद्धांतों का उपोत्पाद है। यह निश्चित नहीं है कि वे इसे स्वतंत्र चर या आश्रित चर, कारण या प्रभाव मानते है। इस प्रकार, संपूर्ण परिप्रेक्ष्य रूढ़िवादी, स्थिर और कालानुक्रमिक हो जाता है। दूसरी ओर, कुछ अन्य इस धारणा पर ही सवाल उठाते हैं कि सरकार की एक प्रणाली जारी रहती है क्योंकि यह देश की राजनीतिक संस्कृति के अनुरूप है। एक राजनीतिक संस्कृति के कई विवरण प्रायः रुढिबद्धता में अभ्यास से थोड़ा अधिक होते हैं जो हमेशा संबंधित देश के भीतर विविधता की उपेक्षा करते है। कुछ मामलों में, राजनीतिक संस्कृति के वर्णन स्थिर होने के साथ–साथ सरलीकृत भी होते है, राजनीतिक अनुभवों की प्रतिक्रिया में एक संस्कृति निरंतर कैसे विकसित होती है इस बारे में संवेदनशीलता होती है। यह दृष्टिकोण प्रगतिशील नहीं बल्कि प्रतिक्रियावादी है।

तुलनात्मक राजनीति की गतिशीलता को समझते हुए, राजनीतिक संस्कृति के दृष्टिकोण के नुकसान को समझने के बाद, यह दृष्टिकोण गुणों के बिना नहीं है। राजनीतिक संस्कृति के दृष्टिकोण ने निश्चित रूप से राजनीतिक विज्ञानकों की व्यापक और वैज्ञानिक रूप से राजनीतिक प्रणाली के मनोवैज्ञानिक वातावरण की जांच करने की क्षमता को बढ़ाया है। इस ने एक शैली, अच्छी तरह से विकसित अवधारणा में संहिताबद्ध और संश्लेषित किया है, जो कि राष्ट्रीय मनोबल, राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय मनोविज्ञान और इसी तरह की पारंपरिक अवधारणाओं के माध्यम से, एक अमूर्त और आरंभिक फैशन में अध्ययन किया गया था।

राजनीतिक संस्कृति के दृष्टिकोण ने राजनीतिक वैज्ञानिकों के लिए राजनीतिक प्रणाली के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक वातावरण का व्यवस्थित और व्यापक रूप से विश्लेषण करना आसान बना दिया है; इसने राजनीतिक प्रणालियों के सूक्ष्म और स्थूल दोनों अध्ययनों का संचालन के साथ–साथ सूक्ष्म–स्थूल राजनीति के बीच के अंतर को समझने में योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण के माध्यम से, राजनीतिक वैज्ञानिक विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों के व्यवहार में अंतर को व्यवस्थित रूप से समझा सकते है विशेष रूप से विभिन्न समाजों में काम करने वाली समान राजनीतिक संस्थाओं के व्यवहार में अंतर होता है।

राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को उस प्रक्रिया में अध्ययन करने के लिए भी दृढ़ किया है, जिसके माध्यम से समाज की राजनीतिक संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाती है, अर्थात राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया। इस का उपयोग

राजनीतिक व्यवस्था के राजनीतिक विकास के पथ का विश्लेषण करने के लिए किया जा सकता है।

राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण का उपयोग कई राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा कई राजनीतिक प्रणालियों में संभावित राजनीतिक परिवर्तनों, हिंसक परिवर्तनो– क्रांतियो और बलात राज्य परिवर्तन की प्रकृति और गतिशीलता की जांच के लिए भी किया गया है।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की जाँच करें।

1) आलमंड के विश्लेषण में, अधिनायकवादी राज्यों में राजनीतिक संस्कृति की क्या विशेषताएं हैं?

....

....

....

....

....

....

2) तुलनात्मक राजनीति के दृष्टिकोण के रूप में राजनीतिक संस्कृति की कुछ प्रमुख कमियों को इंगित करें।

....

....

....

....

....

1.6 सारांश

उपरोक्त में, तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के रूप में राजनीतिक संस्कृति की विभिन्न गतिशीलता पर चर्चा की गई है जंहा से यह प्राप्त किया जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति ने राजनीति विज्ञान को संयुक्त सूक्ष्म–स्थूल दृष्टिकोण पर अपने जोर के माध्यम से सामाजिक विज्ञान की अधिक संपूर्ण शाखा बना दिया है। इसने हमारा ध्यान राजनीतिक समुदाय या समाज, जो एक गतिशील सामूहिक सत्ता के रूप में व्यक्ति से अलग है और कुल राजनीतिक प्रणाली पर हैं, के अध्ययन पर केंद्रित किया है। इसके अतिरिक्त, यह राजनीतिक वैज्ञानिकों को सामाजिक और सांस्कृतिक कारको का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो किसी देश की राजनीतिक संस्कृति को व्यापक आकार देने के लिए जिम्मेदार हैं। एक दृष्टिकोण के रूप में, इसके पक्ष और विपक्ष पर भी चर्चा की गई है कि जंहा यह पाया गया था कि तुलनात्मक राजनीति की गतिशीलता को समझने में इसकी उपयोगिता के पक्ष और विपक्ष दोनों में

तर्क हैं। तर्क कुछ भी हो लेकिन सुरक्षित रूप से संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस दृष्टिकोण की समझ के माध्यम से विभिन्न प्रणालियों की राजनीतिक प्रक्रियाओं को सबसे अच्छी तरह से जाना जा सकता है – इनकी तुलना की जा सकती है।

1.7 संदर्भ

ए आर बॉल. (1971). मार्डन पॉलिटिक्स एंड गवर्नमेंट. लंदनः मैकमिलन.

आलमंड, गेब्रियल ए और सिडनी वर्बा. (1972).सिविक कल्चर. नयी जर्सीःप्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

आलमंड, गेब्रियल और पॉवेल, बिंघम जी. (1966).कंपेरेटिव पॉलिटिक्स अप्रोच. बोस्टन; लिटिल ब्राउन एंड कंपनी.

एंड्रयू हेवुड.(2019).पॉलिटिक्स. लंडनः रेड ग्लोबल प्रेस.

एथ्रिज ई मार्कस, हॉवर्ड हैंडेलमैन.(2010). पॉलिटिक्स इन चेंजिंग वर्ल्डः ए कंपेरेटिव इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल साइंस. बोस्टन, मेसाचुसेट्स;

वड्सवर्थ सेंगेज लर्निंग.

सामाजिक विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोश। (1968), राजनीतिक की परिभाषा संस्कृति। न्यूयॉर्क. मैकमिलन

पैट्रिक ओ' नील. (2017). इशेनशियलश ऑफ कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स. न्यूयॉर्क नॉर्टन एंड कंपनी.

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न अभ्यास 1

1) राजनीतिक संस्कृति को परिभाषित करने के कई तरीके हैं। आलमंड और वेरबा इसे राजनीतिक प्रणाली और इसके विभिन्न भागों के प्रति राजनीतिक झुकाव और दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित करते है और प्रणाली में स्वयं की भूमिका के प्रति दृष्टिकोण है।

2) कुलीन संस्कृति में जिस के द्वारा आयोजित राजनीति के बारे में विश्वास, दृष्टिकोण और विचार शामिल हैं वह राजनीतिक सत्ता के केंद्रों के सबसे निकट हैं। यह आम तौर पर अधिक सुसंगत और प्रभावशाली है।

बोध प्रश्न अभ्यास 2

1) अधिनायकवादी राज्यों में राजनीतिक संस्कृति को केंद्रीय नियंत्रण या संचार के साधनो और हिंसा की एजेंसियों द्वारा उत्पन्न अनुरूपता या उदासीनता के कुछ संयोजनों द्वारा चिह्नित किया जाता है। बाध्यकारिता अधिकार के प्रयोग की पहचान है। और इसमें कम लोगों की भागीदारी है।

2) आपके उत्तर में निम्नलिखित की सूची होनी चाहिए: आधुनिक राजनीतिक प्रणाली, अभिजात वर्ग और जन संस्कृति में अंतर करने में कठिनाइयाँ, संस्कृति की एक उपप्रणाली होने से उत्पन्न होने वाली अस्पष्टता के अध्ययन के लिए एक सटीक चर नहीं है, परिवर्तन की व्याख्या के बिना वर्गीकरण करने का कार्य नहीं हो सकता।

इकाई–2 राजनीतिक आधुनिकीकरण *

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 आधुनिकीकरण सिद्धांतः विकासवादी और कार्यात्मक

2.2.1 पार्सन्स पैटर्न चर

2.3 राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण

2.3.1 विभेदन

2.3.2 धर्मनिरपेक्षीकरण

2.3.3 सांस्कृतिक आधुनिकीकरण

2.3.4 परंपरा से आधुनिकता की ओर

2.4 राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की आलोचना

2.4.1 निर्भरता सिद्धांत

2.4.2 गंभीर परिवर्तनीय दृष्टिकोण

2.4.3 द्विबीजपत्री (द्विभाजन द्वारा प्रदर्शित) दृष्टिकोण

2.5 तीसरी दुनिया के देशों में राजनीतिक व्यवस्था

2.5.1 लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया

2.6 सारांश

2.7 संदर्भ

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण के रूप में राजनीतिक आधुनिकीकरण से परिचित कराना है। यह राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की कुछ मुख्य विशेषताओं, मान्यताओं और सीमाओं की जांच करेगा। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप इस योग्य हो जाएंगे:

---

* डॉ. चाकली ब्रम्हय्या, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान और मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), अमरकंटक, मध्य प्रदेश

- राजनीतिक आधुनिकीकरण के विकास और उत्पत्ति पर चर्चा करें;
- राजनीतिक आधुनिकीकरण के विभिन्न दृष्टिकोणों और दृष्टिकोणों का परीक्षण करें;
- राजनीतिक आधुनिकीकरण के समकालीन मुद्दों और चुनौतियों का विश्लेषण करें;
- राजनीतिक आधुनिकीकरण की आलोचना और महत्व को स्पष्ट करें।

2.1 प्रस्तावना

राजनीतिक आधुनिकीकरण शब्द का यथार्थ अर्थ देना बहुत आसान नहीं है। हालांकि, इस शब्द का प्रयोग आम तौर पर राजनीतिक दृष्टिकोण में परिवर्तन और राजनीतिक संस्थानों के रूपांतर के संदर्भ में किया जाता है। यह एक पारंपरिक राजनीतिक प्रणाली को आधुनिक प्रणाली में बदलने की प्रक्रिया है। पश्चिम में, राजनीतिक संस्कृति और राजनीतिक संस्थानों में एक लंबी अवधि में परिवर्तन हुए, जिसके परिणामस्वरूप संसाधनों के तर्कसंगत उपयोग के माध्यम से विकास और प्रदर्शन मानकों में वृद्धि हुई। आधुनिक समाज, जैसा कि पश्चिम में उभरा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सामाजिक परस्पर–निर्भरता, शहरीकरण, साक्षरता, सामाजिक गतिशीलता आदि की विशेषता है। राजनीति में, आधुनिकीकरण ने पारंपरिक राजनीतिक प्रणाली से आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवर्तन को संदर्भित किया।

1950 के दशक के उत्तरार्ध में तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक आधुनिकीकरण एक प्रमुख दृ–ष्टिकोण के रूप में उभरा। यह विविध क्षेत्रों में राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक जीवन की विशेषताओं को बदलने से संबंधित है। यह उदारवाद, धर्मनिरपेक्षता, पारदर्शिता औद्योगीकरण जैसे आधुनिक विचारों द्वारा परिवर्तित राजनीतिक संरचना और संस्कृति विशेषताओं में परिवर्तन को संदर्भित करता है। यह दृष्टिकोण, राजनीतिक संस्कृति और ग्रामीण और शहरी सामाजिक जीवन में बदलाव से भी संबंधित है। इस प्रक्रिया में, अन्य बातों के अतिरिक्त, धर्म/चर्च के प्रभुत्व का अंत और एक धर्मनिरपेक्ष और केंद्रीय राजनीतिक सत्ता की स्थापना शामिल थी।

हालांकि, राजनीतिक आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण ने 1960 के दशक के अंत तक गैर–पश्चिमी विश्व में विद्वानों से और भीतर से उभरने वाली चुनौतियों के परिणामस्वरूप अपना उत्साह खो दिया। फिर भी, 1990 के दशक के आरम्भ से राष्ट्रों की बढ़ती परस्पर–निर्भरता के संदर्भ में राजनीतिक आधुनिकीकरण में रुचि का पुनःप्रवर्तन हुआ है। आधुनिकीकरण प्रक्रिया की कुछ विशेषताएं जैसे कि विभेदीकरण, धर्मनिरपेक्षता, युक्तिकरण, आर्थिक विकास और स्थायी लोकतंत्र के साथ इसके संबंध तुलनात्मक विश्लेषण में महत्व प्राप्त कर रहे हैं। यह इकाई आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताओं और मान्यताओं की जांच करती है। यह इस दृ–ष्टिकोण की कुछ सीमाओं और इसके समकालीन महत्व की भी जांच करता है।

2.2 आधुनिकीकरण सिद्धांत: विकासवादी और कार्यात्मक

1950 के दशक में, आधुनिकीकरण सिद्धांत ने राजनीति विज्ञान सहित सामाजिक विज्ञान के कई विषयों के अनुसंधान एजेंडे को प्रभावित करना आरम्भ कर दिया। यह अनुशासन में

बौद्धिक उत्तेजना के परिणामस्वरूप हुआ और व्यक्तिगत और समूह व्यवहार की समझ में प्रगति के आधार पर अंतर्दृष्टि, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र पर आधारित राजनीति के सैद्धांतिक क्षेत्र में शामिल किया गया। यह विश्व युद्ध के बाद के वर्षों की ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण भी हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका एक महाशक्ति के रूप में उभरा था, जबकि ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी कमजोर हो गए थे। अमेरिका एक विश्व नेता के रूप में उभरा, विशेष रूप से युद्ध से तहस–नहस पश्चिमी यूरोप के पुनर्निर्माण और पुनर्निर्माण के लिए मार्शल योजना को लागू करने के बाद। 1950 के दशक में विश्व के मामलों में अमेरिका का प्रभुत्व आरम्भ हो गया था। उसी समय, सोवियत संघ के नेतृत्व में साम्यवादी आंदोलन का प्रसार हुआ। सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोपीय देशों और एशिया में चीन और कोरिया पर अपना प्रभाव बढ़ाया। अमेरिका साम्यवाद के प्रसार को नियंत्रित करना चाहता था। एशिया और अफ्रीका में यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यों के विघटन ने युद्ध के बाद की अवधि में कई नए राष्ट्र–राज्यों को जन्म दिया था। नव उभरे स्वतंत्र राष्ट्र–राज्यों को दो वैकल्पिक विकास मॉडल, समाजवादी और पूंजीवादी मॉडल का सामना करना पड़ा, ताकि उनकी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया जा सके और उनकी स्वतंत्रता को मजबूत किया जा सके। ऐसी ऐतिहासिक परिस्थितियों में, यह स्वाभाविक था कि अमेरिकी राजनीतिक अभिजात वर्ग ने अपने सामाजिक वैज्ञानिकों को अपने आर्थिक विकास और राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए 'नए', 'उभरते', 'अविकसित' या 'विकासशील' राष्ट्रों का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उन्हें सोवियत साम्यवादी गुट के लिए हानि से बचाया जा सके (चिरोट 1981, पृष्ठ 2. 61–262)। अमेरिकी सरकार और निजी संस्थानों के समर्थन और संरक्षण के साथ, राजनीतिक वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, मानवविज्ञानी, और जनसांख्यिकीविदों ने गैर–पश्चिमी समाजों पर अध्ययन में कदम रखा, विशेष रूप से वे जो उपनिवेशवाद से बाहर निकल रहे थे।

गैर–पश्चिमी समाजों के विकास पर अधिकांश शोध आधुनिकीकरण के दो सिद्धांतों–विकासवादी और कार्यानुरूप सिद्धांतों से प्रभावित थे। विकासवादी सिद्धांत ने आधुनिकीकरण को पारंपरिक से आधुनिक समाज में परिवर्तन के संदर्भ में समझाया। यह सिद्धांत औद्योगिक क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति का परिणाम था जिसने पुरानी सामाजिक व्यवस्था को नष्ट कर दिया और एक नई सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ उत्पादकता में वृद्धि हुई। नया आदेश श्रम के गहन विभाजन और विश्व बाजारों के अधिग्रहण के साथ एक नई कारखाना उत्पादन प्रणाली थी। आधुनिकता के मूल मार्ग को बढ़ते हुए विभेदीकरण और पैमाने के रूप में जाना जाता है। श्रम के गहन विभाजन को विकसित करने में सबसे सफल समाज अत्यधिक उत्पादक बनने में सक्षम थे। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ–साथ श्रम विभाजन की प्रक्रिया तीव्र हुई और राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति को भी बदल दिया।

दूसरी ओर, फ्रांसीसी क्रांति ने स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और संसदीय लोकतंत्र पर आधारित एक नई राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण किया। शास्त्रीय विकासवादी सिद्धांत ने माना कि मानव समाज हमेशा एक प्राचीन चरण से एक उन्नत चरण की ओर बढ़ता है। इस प्रकार मानव विकास का भाग्य पूर्व निर्धारित है। एक सरल, प्राचीन समाज से एक जटिल, आधुनिक समाज में विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसे पूरा होने में सदियों लगेंगे।

इसने विकासवादी प्रक्रिया पर एक मूल्य निर्णय लगाया। अंतिम चरण की ओर बढ़ना अच्छा है क्योंकि यह प्रगति, मानवता और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। विकासवाद के सिद्धांत के मूल में यह धारणा है कि सामाजिक परिवर्तन की दर धीमी, क्रमिक और अलग–अलग है, अर्थात यह विकासवादी है, क्रांतिकारी नहीं। आधुनिकीकरण स्कूल की सैद्धांतिक विरासत का एक अन्य हिस्सा टैल्कॉट पार्सन्स का कार्यात्मक सिद्धांत है, जिसकी अवधारणाओं में प्रणाली, कार्यात्मक अनिवार्यता, समस्थिति संतुलन और प्रतिमान चर शामिल हैं। पार्सन्स आरम्भ में एक जीवविज्ञानी थे, और उनके प्रारंभिक प्रशिक्षण ने उनके कार्यात्मक सिद्धांत के निर्माण को बहुत प्रभावित किया। पार्सन्स के लिए, मानव समाज एक जैविक जीव की तरह है और एक जीव की तरह इसका अध्ययन किया जा सकता है। पार्सन्स के काम को समझने के लिए जीव चित्रण बहुत महत्वपूर्ण है। एक जैविक जीव के विभिन्न भाग विभिन्न संस्थाओं से मेल खाते हैं जो एक समाज बनाते हैं। जिस तरह एक जैविक जीव बनाने वाले भाग जैसे आंख और हाथ एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया में परस्पर जुड़े और परस्पर निर्भर होते हैं, वैसे ही समाज में संस्थाएं जैसे अर्थव्यवस्था और सरकार एक दूसरे से निकटता से संबंधित हैं। पार्सन्स ने संस्थाओं के बीच सामंजस्यपूर्ण समन्वय को दर्शाने के लिए प्रणाली की अवधारणा का उपयोग किया। जिस प्रकार जैविक जीव का प्रत्येक अंग संपूर्ण के लिए एक विशिष्ट कार्य करता है, उसी प्रकार प्रत्येक संस्था समाज की स्थिरता और विकास के लिए विशिष्ट कार्य करती है। पार्सन ने 'कार्यात्मक अनिवार्यता' की अवधारणा तैयार की, यह तर्क देते हुए कि चार महत्वपूर्ण कार्य हैं जिन्हें प्रत्येक समाज को करना चाहिए; नहीं तो समाज मर जाएगा। इन चारों को AGIL कार्य (अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण, विलंबता के लिए) कहा जाता है।

1) अनुकूलनः अर्थव्यवस्था द्वारा निष्पादित पर्यावरण के लिए

2) लक्ष्य प्राप्तिः सरकार द्वारा किया गया

3) एकीकरणः कानूनी संस्थाओं और धर्म द्वारा किए गए कार्यो से संस्थानों को एक साथ जोड़ना

4) विलंबताः परिवार और शिक्षा द्वारा किए गए कार्यो के मूल्यों के स्वरूप का पीढ़ी से पीढ़ी रखरखाव (एल्विन वाई सोः 1990:20)

2.2.1 पार्सन्स प्रतिमान (पैटर्न) चर

पारंपरिक समाजों को आधुनिक समाजों से अलग करने के लिए पार्सन्स ने 'प्रतिमान चर' की अवधारणा तैयार की है। प्रतिमान चर सांस्कृतिक प्रणाली में प्रमुख सामाजिक संबंध हैं, जो उनके सैद्धांतिक ढांचे में सबसे महत्वपूर्ण प्रणाली है। पार्सन्स के लिए, प्रतिमान चर के पांच समूह हैं। पहला समूह भावात्मक बनाम भावात्मक–तटस्थ संबंध है। पारंपरिक समाजों में, सामाजिक संबंधों में व्यक्तिगत, भावनात्मक और आमने–सामने की बातचीत को प्राथमिकता दी जाती है। आधुनिक समाजों में, सामाजिक संबंधों में एक भावात्मक–तटस्थ होता है, जिसका अर्थ है अवैयक्तिक, अलग और अप्रत्यक्ष। प्रतिमान चर का दूसरा समूह बहुलवादी बनाम सार्वभौमिक संबंध है। पारंपरिक समाजों में, लोग एक ही सामाजिक क्षेत्र के सदस्यों के साथ जुड़ने के इच्छुक होते हैं। आधुनिक समाजों में, लोग अपने दैनिक जीवन में अज्ञात लोगों के साथ सहभागिता करने के लिए बाध्य हैं, और वे विशाल जनसंख्या के कारण स्थापित मानकों का उपयोग करके बातचीत करते हैं। प्रतिमान चर का तीसरा समूह सामूहिक अभिविन्यास बनाम आत्म–अभिविन्यास है। पारंपरिक समाजों में,

वफादारी प्रायः परिवार और समुदाय के प्रति देय होती है। आधुनिक समाजों में, आत्म–अभिविन्यास व्यक्तिगत होने, व्यक्तिगत प्रतिभा विकसित करने और करियर बनाने के लिए प्रोत्साहन पर जोर देता है। प्रतिमान चर का चौथा समूह अभिलिखित बनाम उपलब्धि है। पारंपरिक समाजों में, एक व्यक्ति का मूल्यांकन उनकी निर्धारित स्थिति, जन्म से निर्दिष्ट व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या जीवन में बाद में अनैच्छिक रूप से ग्रहण किया जाता था। उदाहरण के लिए, भर्ती प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि नियोक्ता एक अच्छा दोस्त है या आवेदक का संबंधी। आधुनिक समाजों में, एक व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी प्राप्त स्थिति, जैसे शैक्षणिक योग्यता से किया जाता है। नौकरी की भर्ती के दौरान, नियोक्ता आवेदक की योग्यता और पिछले नौकरी के अनुभव के बारे में अधिक ध्यान देता है। प्रतिमान चर का पांचवां और अंतिम समूह कार्यात्मक रूप से विशिष्ट संबंध बनाम कार्यात्मक रूप से प्रचारित है। पारंपरिक समाजों में, भूमिकाएँ कार्यात्मक रूप से प्रचारित होती हैं। उदाहरण के लिए, नियोक्ता की भूमिका केवल कर्मचारियों को काम पर रखने की नहीं है; लेकिन इसमें शिक्षुता के माध्यम से टीम के सदस्य का प्रशिक्षण भी शामिल है और कर्मचारियों के अभिभावक होने के नाते आजीविका और कल्याण का ध्यान रखते हैं। आधुनिक समाजों में, भूमिकाएँ कार्यात्मक रूप से विशिष्ट होती हैं। टीम के सदस्य के प्रति नियोक्ता की सीमित जिम्मेदारी होती है, और उनका संबंध शायद ही कभी पेशेवर क्षेत्र से आगे बढ़ता है। (एल्विन सोः 1990ः 21–23)

बोध प्रश्न 1

नोट i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तरों से अपने उत्तरों की जाँच करें।

1) राजनीतिक आधुनिकीकरण के विकासवादी सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

2.3 राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण

तुलनात्मक राजनीति में आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण का पता 19वीं शताब्दी के यूरोप में सामाजिक परिवर्तन की विकासवादी व्याख्याओं से लगाया जा सकता है। फ्रांसीसी दार्शनिकों और आधुनिक समाजशास्त्र के संस्थापक अगस्टे कॉम्टे और एमिल दुर्खीम, ब्रिटिश दार्शनिक हर्बर्ट स्पेंसर, मैक्स वेबर और कार्ल मार्क्स ने पूर्व–औद्योगिक से औद्योगिक समाज में परिवर्तन के विभिन्न स्पष्टीकरण दिए। आधुनिकीकरण सिद्धांत लंबे समय से दो प्रमुख धाराओं में विभाजित किया गया है। पहला मार्क्सवादी विवरण है, जो तर्क देता है कि अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं क्योंकि आर्थिक विकास समाज की राजनीतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को निर्धारित करता है। दूसरा, वेबेरियन संस्करण, यह मानता है कि संस्कृति अर्थव्यवस्था और राजनीतिक जीवन

को आकार देती है। दो धाराओं के बीच निरंतर बहस के बावजूद, केंद्रीय बिंदु पर उनका एक ही विचार है कि सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन तर्कयुक्त और अपेक्षाकृत अपेक्षित प्रतिमानों का पालन करता है। इस प्रकार उनका अर्थ है कि महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विशेषताएँ बेतरतीब ढंग से संबंधित नहीं हैं; वे गुप्त रूप से संबंधित होते हैं। दो तत्व जो सामाजिक परिवर्तन की उनकी व्याख्या में सामान्य थे, वे थे– निरंतरता और प्रगति में विश्वास। परिवर्तन न केवल निरंतर था बल्कि प्रगतिशील भी था। इन विचारकों के लिए, परिवर्तन का तात्पर्य कृषि से उद्योग तक, सामंतवाद से पूंजीवाद में, पारंपरिक से आधुनिक में उन्नति और सुधार से है। इस तरह के परिवर्तन में प्रक्रियाओं के दो समूह शामिल थे, बढ़ी हुई जटिलता और मानव संगठन और गतिविधि की अधिक विशेषज्ञता। इन प्रक्रियाओं को समाज में अधिक भिन्नता के संदर्भ में वर्णित किया गया था। माना जाता है कि पश्चिम के औद्योगिक पूंजीवादी समाजों ने अन्य समाजों की तुलना में अधिक विभेदीकरण हासिल किया है। दूसरे शब्दों में, एक परिवर्तनशील समाज वह था जो अधिकांश विकसित देशों के लिए सामान्य विशेषताओं को प्राप्त करता है।

2.3.1 विभेदन / विभेदीकरण

फ्रांसीसी दार्शनिक और समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम ने सामाजिक भेदभाव को प्रतिपादित किया है और समाज में श्रम विभाजन के विचार की दृढ़तापूर्वक वकालत की है। सामाजिक गतिविधियों को विभिन्न संस्थाओं के बीच विभाजित किया गया है। संचार, शहरीकरण और जनसंख्या के कारण श्रम का विभाजन बढ़ा दिया गया था। समाज में अधिक महत्वपूर्ण विविधता और संस्थागत विशेषज्ञता के संदर्भ में भेदभाव को परिभाषित किया गया है। पारंपरिक समाजों में परिवार ने कई भूमिकाएँ निभाईं। इसके विपरीत, आधुनिक समाजों में शिक्षा, समाजीकरण के लिए विशेष संस्थान हैं। परिवार की भूमिका को प्रतिबंधित कर दिया गया है, और नई संस्थाओं ने आधुनिक समाजों में अनेक भूमिकाएँ निभाई हैं। नव–विकासवादियों के विश्लेषण के अनुसार राजनीतिक भूमिकाओं की विशेषज्ञता आधुनिक राजनीति में परिलक्षित हुई है। एस. एन. ईसेनस्टेड (1966) ने तर्क दिया है कि संरचनात्मक विभेदीकरण ने स्तरीकरण को प्रभावित किया है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने विखंडन को जन्म दिया है। राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सैन्य नेताओं, बुद्धिजीवियों, नौकरशाहों, राजनीतिक अभिजात वर्ग और उद्यमियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2.3.2 धर्मनिरपेक्षीकरण

धर्मनिरपेक्षता के कारण समाज अधिक युक्तिसंगत हो गए हैं। धर्मनिरपेक्षता व्यक्ति को पवित्र और पवित्र नहीं के बीच अंतर करने में सक्षम बनाती है। अंत में, यह तर्कसंगत जांच की ओर ले जाएगा। मैक्स वेबर, एक जर्मन समाजशास्त्री, सामाजिक क्रिया पर आधारित आधुनिकीकरण सिद्धांत विकसित करने में अग्रणी थे। सामाजिक क्रिया को कारण द्वारा निर्धारित कार्यों और आदत या भावना द्वारा निर्धारित कार्यों के बीच प्रतिष्ठित किया गया है (वेबर 1965)। वेबर की नौकरशाही प्रणाली तर्कसंगत सरकार पर आधारित थी। तर्कसंगत–कानूनी प्राधिकरण ने नियमों और विनियमों के आधार पर साधन और साध्य के विचार को जोड़ दिया है। तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान द्वारा अधिक तर्कसंगतता का समर्थन किया गया है। राजनीतिक आधुनिकीकरण को संस्थाओं से जोड़ा गया है, जो मानव ज्ञान के विकास में योगदान देंगे।

रुस्टो ने आधुनिकीकरण को प्रकृति पर तेजी से बढ़ते नियंत्रण (1967) के रूप में परिभाषित किया है। बैरिंगटन मूर ने आधुनिकीकरण की तुलना सामाजिक व्यवहार और सामाजिक संगठनों के समीकरण की प्रक्रिया से की है। आधुनिकीकरण प्रकृति पर बढ़ते नियंत्रण का परिणाम है। राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण के महत्व को समझने के लिए, पारंपरिक समाजों (हिगॉट 1978, स्मिथ 2003) की मुख्य विशेषताओं को जानना आवश्यक है, जिनकी संस्थाओं और मूल्यों को राजनीतिक आधुनिकीकरण में बाधा माना जाता था।

2.3.3 सांस्कृतिक आधुनिकीकरण

युक्तिकरण और धर्मनिरपेक्षता के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक आधुनिकीकरण की गतिशीलता में परिवर्तन हुए हैं। इसे टैल्कॉट पार्सन्स द्वारा प्रतिमान चर के रूप में पहचाना और वर्णित किया गया है। यह मूल्यों से जुड़ा हुआ है, और लोग अपने समाज के बारे में निर्णय लेते हैं। सामाजिक परिवर्तन क्षेत्रीय समुदायों, सामाजिक संगठनों, परिवार और व्यवसायों की गतिशीलता को समझने में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, पार्सन्स ने तर्क दिया है कि आधुनिक समाज सार्वभौमिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। आधुनिक समाज भी सामाजिक संबंधों की परवाह किए बिना सार्वभौमिक मानदंडों पर निर्णय लेता है।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि हमने देखा, पार्सन्स ने प्राप्त स्थिति के साथ निर्धारित स्थिति की तुलना की है। निर्धारित स्थिति का अर्थ है व्यक्तियों में निहित जन्मजात/पैतृक गुण। प्राप्त स्थिति का अर्थ है शैक्षिक योग्यता जैसे व्यक्ति के अर्जित गुण। व्यक्ति अपनी शैक्षिक योग्यता के कारण आधुनिक समाज में स्थिति प्राप्त करता है। पारंपरिक समाजों में, व्यक्ति विरासत से स्थिति प्राप्त करेंगे। एक व्यक्ति वंशानुगत सिद्धांत के आधार पर अनुवांशिक समाज में पद ग्रहण करता है, जबकि नौकरशाहों की नियुक्ति योग्यता और शैक्षिक योग्यता के आधार पर की जाती है। पार्सन्स ने तटस्थता के साथ प्रभावकारिता के सांस्कृतिक प्रतिमान का विश्लेषण किया है। प्रभावकारिता' लोगों के बीच भावनात्मक भावनाओं और विचारों को जन्म देती है। तटस्थता व्यक्तिगत संबंधों की ओर ले जाती है। अंत में, उन्होंने विशिष्टता के साथ विस्तार की तुलना की है। विस्तार का तात्पर्य एक दूसरे के साथ संबंधों के जटिल जाल से है (स्मिथ 2003)। विशिष्ट सामाजिक प्रणाली को नियोक्ता और कर्मचारी, मकान मालिक या किरायेदार के बीच संबंधों को विस्तृत करने में सक्षम बनाती है। आधुनिक समाजों में व्यक्ति अनेक भूमिकाएँ निभाते हैं। विशिष्टता सामाजिक संबंधों और सापेक्ष स्वतंत्रता के विभाजन को इंगित करती है। विस्तृत संबंध व्यक्ति को समाज में कई कार्य करने में सक्षम बनाता है। ये चर आधुनिक समाज के परिवर्तन और प्रगति का संकेत देते हैं। अंत में, इन विकासों ने राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2.3.4 परंपरा से आधुनिकता की ओर

18वीं और 19वीं शताब्दी में, राजनीतिक आधुनिकीकरण राष्ट्रीय–राज्य के उदय और औद्योगीकरण से जुड़ा था। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, राजनीतिक आधुनिकीकरण पारंपरिक या सामंती और अर्ध–सामंती राजनीतिक प्रणालियों के आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणाली में परिवर्तन का उल्लेख करने के लिए आया था। राजनीतिक आधुनिकीकरण सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं में परिवर्तन के संदर्भ में राजनीतिक प्रणाली का वर्णन करता है। प्रारंभिक राजनीतिक आधुनिकीकरण विद्वानों ने तर्क दिया है कि

आर्थिक विकास से सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन होते हैं, जो बदले में नागरिकों के राजनीतिक व्यवहार में परिवर्तन की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार, राजनीतिक और आर्थिक कारकों के बीच एक संबंध है। जैसे–जैसे देश आर्थिक रूप से प्रगति और आधुनिकीकरण करते हैं, कृषि से औद्योगीकरण की ओर परिवर्तन होता है। औद्योगीकरण से शहरीकरण होता है जिसके परिणामस्वरूप मीडिया, सूचना और शिक्षा तक बेहतर पहुंच होती है। यह मध्य वर्ग के उदय की ओर ले जाता है जो राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेता है।

अमेरिकी राजनीतिक समाजशास्त्री Karl Deutsch (1961) ने पार्सन्स के काम पर निर्माण करते हुए सामाजिक जुटाव की अवधारणा विकसित की। उन्होंने सामाजिक जुटाव को राजनीतिक आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण घटक माना। सामाजिक जुटाव का अर्थ है समाज में परिवर्तन और पारंपरिक से आधुनिकता में परिवर्तन जैसे–जैसे देश औद्योगीकरण की ओर बढ़ते हैं, शहरीकरण नागरिकों के लिए राजनीति में भाग लेने के लिए अनुकूल माहौल बनाता है। शिक्षा, सामाजिक नेटवर्क, शहरीकरण को सामाजिक जुटाव के महत्वपूर्ण पहलू माना गया क्योंकि उन्होंने नागरिकों में राजनीतिक जागरूकता पैदा की। नागरिकों की जागरूकता ने, बदले में, नागरिकों के समग्र विकास के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को शुरू करने की मांग उठाई है।

सीमोर मार्टिन लिपसेट (1959) ने तर्क दिया है कि आधुनिकीकरण से लोकतंत्र का उदय होगा और विकासशील विश्व में इसका एकत्रीकरण होगा। जैसे–जैसे देश आर्थिक रूप से विकसित होते हैं, वे मध्यम वर्ग के उदय को देखते हैं, जो नागरिक समाज और राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेतें हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने तर्क दिया है कि शिक्षा नागरिकों के सशक्तिकरण में योगदान करती है। यह स्पष्ट हो गया है कि शिक्षित नागरिकों ने राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया है और निर्णय लेने वाली सरकारें विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को लागू कर रही हैं और शिक्षित मध्यम वर्ग को छूट प्रदान कर रही हैं। यह प्रक्रिया समकालीन वैश्विक दुनिया में अधिक मजबूत लोकतंत्रों के उद्भव की ओर ले जाएगी।

हालांकि यह तुलनात्मक राजनीति पर समिति के प्रमुख गेब्रियल ए आलमंड द्वारा विकसित ढांचा था जिसने राजनीतिक आधुनिकीकरण पर कई अध्ययनों की शुरुआत की। विकासशील क्षेत्रों की राजनीति (1960) में, आलमंड ने अपना कार्यात्मक ढांचा प्रस्तुत किया जो आधुनिक–परंपरा द्विभाजन और ईस्टन की राजनीतिक प्रणाली के इनपुट–आउटपुट कार्यों पर निर्भर था।

आलमंड के ढांचे में, सभी राजनीतिक प्रणालियों में ये बातें समान थीं:

1) राजनीतिक संरचनाएं हैं। संरचनात्मक विशेषज्ञता के स्तर और रूप के अनुसार तुलना की जा सकती है। आलमंड ने राज्य/गैर–राज्य भेद को रद्द कर दिया: राजनीतिक कार्य सभी समाजों में होते हैं, हालांकि उनका विभिन्न संरचनाओं द्वारा निर्वहन किया जा सकता है।

2) उनके समान राजनीतिक कार्य हैं। इस आधार पर तुलना की जा सकती है कि कौन सी संरचनाएं इन कार्यों को करती हैं और वे नियमित रूप से ऐसा कैसे करती हैं। राजनीतिक सिद्धांत का एक मुख्य कार्य इन कार्यों की पहचान करना है। आलमंड, डेविड ईस्टन की तरह, राजनीतिक प्रणालियों के कार्यात्मक तत्वों को

"इनपुट" और "आउटपुट" में विभाजित किया। राजनीतिक इनपुट थे (क) राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती; (ख) ब्याज अभिव्यक्ति; (ग) ब्याज एकत्रीकरण; और (घ) राजनीतिक संचार। आउटपुट थे (क) नियम बनाना; (ख) नियम आवेदन; और (ग) शासन अधिनिर्णय।

3. सभी राजनीतिक संरचनाएं बहुक्रियाशील हैं। 'विशिष्टता के स्तर' की तुलना की जा सकती है। 'राजनीतिक आधुनिकता' या 'राजनीतिक विकास' का स्तर अनिवार्य रूप से इस विशिष्टता के स्तर से निर्धारित किया जाता था।

जैसा कि हम देख सकते हैं, परंपरा के पक्ष में आलमंड का पूर्वाग्रह – आधुनिक द्विभाजन और विकास के लिए रैखिक मार्ग ढांचे में बनाया गया था। वास्तव में, उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया जब उन्होंने लिखा कि "राजनीतिक वैज्ञानिक जो गैर–पश्चिमी क्षेत्रों में राजनीतिक आधुनिकीकरण का अध्ययन करना चाहते हैं, उन्हें आधुनिक मॉडल में विशेषज्ञ बनना होगा, जो बदले में केवल सबसे सावधान अनुभवजन्य और आधुनिक पश्चिमी राजनीति के कार्यों के औपचारिक विश्लेषण से प्राप्त किया जा सकता है"। उन्होंने अपनी श्रेणियों को 'उन्नत' देशों के अनुभव से आकर्षित किया। उदाहरण के लिए, यह स्पष्ट था कि सरकार की पश्चिमी विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शाखाओं पर नियम बनाने, नियम अधिनिर्णय और नियम आवेदन की श्रेणियां का लगभग समान रूप से नक्शा बनाया गया था।

तुलनात्मक राजनीति पर समिति (सीसीपी) के नेतृत्व में आलमंड की अध्यक्षता में अमेरिकी सरकार और निजी दान से उदार समर्थन प्राप्त हुआ, आलमंड के कार्यात्मक ढांचे और राजनीतिक आधुनिकीकरण पर अध्ययन ने तुलनात्मक राजनीति में अधिक प्रोत्साहन दिया। सीसीपी के कई सदस्य जैसे लुसियन पाई, मायरोन वेनर, जोसेफ ला पालोम्बारा, रॉबर्ट वार्ड, सिडनी वर्बा, लियोनार्ड बाइंडर और जेम्स कोलमैन राजनीतिक आधुनिकीकरण विषयों से संबंधित कई अध्ययनों के साथ सामने आए। कई विश्वविद्यालयों के भी इसी तरह के अध्ययन में शामिल होने के साथ, राजनीतिक आधुनिकीकरण 1960 के दशक में तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में विकासशील देशों के अध्ययन के लिए व्यापक दृष्टिकोण के रूप में उभरा।

2.4 राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की आलोचना

तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण को 1960 के दशक के उत्तरार्ध में चुनौती दी गई। यह तर्क दिया गया है कि राज्यों के पारंपरिक और आधुनिक रूप में वर्गीकरण के अस्पष्ट अंतर्निहित निर्धारण हैं कि विकासशील देशों को पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका की राजनीतिक प्रणाली की विशेषताओं को अपनाना होगा। जातीयतावाद के इस आरोप के अतिरिक्त, आधुनिकीकरण सिद्धांत को भी राजनीतिक और आर्थिक विकास के बीच सहसंबंध पर अत्यधिक जोर देने के लिए चुनौती दी गई है। इसके अतिरिक्त, निर्भरता सिद्धांत ने कुछ लैटिन अमेरिकी देशों की राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन और व्याख्या की है जिन्होंने आर्थिक और राजनीतिक विकास को प्रभावित करने वाले बाहरी कारकों की उपेक्षा के लिए आधुनिकीकरण सिद्धांत की आलोचना की है।

2.4.1 निर्भरता सिद्धांत

निर्भरता सिद्धांत ने राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की आलोचना की है और तर्क दिया है कि आर्थिक विकास सामाजिक गतिशीलता और लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली को बढ़ावा देने की अपेक्षा कमजोर कर सकता है। निर्भरता सिद्धांत ने ध्यान दिया कि वैश्विक दुनिया के आर्थिक विकास में इसकी ऐतिहासिक भूमिका के आधार पर देश के विकास की व्याख्या की जा सकती है। लैटिन अमेरिका का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने बताया कि आर्थिक संबंधों में अत्यधिक औद्योगिक विकसित देशों और मुख्य रूप से प्राथमिक अच्छे उत्पादक अविकसित देशों के बीच, व्यापार की शर्तें हमेशा विश्व के आर्थिक रूप से विकासशील देशों के पक्ष में रही हैं।

इसलिए उन्होंने तर्क दिया है कि विश्व अर्थव्यवस्था में एकीकरण विकासशील देशों के लिए उपयुक्त नहीं है। यह इंगित करता है कि स्थिर आर्थिक विकास तब तक संभव नहीं होगा जब तक कि वे विकसित देशों पर अपनी निर्भरता को दूर नहीं कर लेते। अपनी पुस्तक "अविकसितता का विकास" में, आंद्रे गुंडर फ्रैंक (1970) ने लैटिन अमेरिकी देशों का अध्ययन किया और दिखाया कि ये देश आर्थिक अविकसितता के चक्र में फंस गए हैं और विश्व अर्थव्यवस्था के साथ उनके एकीकरण से ब्राजील और चिली की अपेक्षा विकसित देशों को अत्यधिक लाभ हुआ है। जब वैश्विक दुनिया में वित्तीय निवेश प्रभावित होता है, तो इन देशों को भी नुकसान उठाना पड़ता है।

हालाँकि, 1980 के दशक की शुरुआत में, विभिन्न कारणों से निर्भरता सिद्धांत को कलंकित कर दिया गया था, उनमें से प्रमुख यह है कि अविकसित जाल, अर्जेंटीना, ब्राजील और कुछ अन्य विकासशील देशों का पूर्वानुमान 1970 और 1980 के दशक में आर्थिक रूप से मजबूत हुआ है।

2.4.2 गंभीर परिवर्तनीय दृष्टिकोण

समालोचना अमेरिकी विश्वविद्यालयों के भीतर काम करने वाले विद्वानों से भी आई और 1973 में डीन टिप्स द्वारा लिखे गए निबंध में अपने चरम पर पहुंच गई। इस निबंध में वह दो व्यापक दृष्टिकोणों के आलोचक थे, जिनका आधुनिकीकरण अध्ययन किया गया था। पहला महत्वपूर्ण परिवर्तनशील दृष्टिकोण था, जिसने आधुनिकीकरण को किसी अन्य विलक्षण कारक, जैसे कि औद्योगीकरण, युक्तिकरण, या भेदभाव के साथ समानता दी। इस दृष्टिकोण के कुछ समर्थकों ने औद्योगीकरण के साथ आधुनिकीकरण की तुलना की थी (उदाहरण के लिए मैरियन लेवी) और अन्य ने औद्योगीकरण के सामाजिक और राजनीतिक परिणामों को इंगित करने के लिए "आधुनिकीकरण" का उपयोग किया था। चूंकि शब्दावली के इस प्रतिस्थापन ने अनावश्यक भ्रम पैदा किया, टिप्स ने सुझाव दिया कि "आधुनिकीकरण" शब्द को छोड़ना और इसकी अपेक्षा अधिक विशिष्ट शब्द का उपयोग करना अधिक अर्थपूर्ण होगा।

2.4.3 द्विबीजपत्री (द्विभाजन द्वारा प्रदर्शित) दृष्टिकोण

टिप्स और अन्य सामाजिक वैज्ञानिक भी आधुनिकीकरण सिद्धांत की अन्य अधिक सामान्य विविधता के आलोचक बन गए, द्विबीजपत्री दृष्टिकोण। आधुनिकीकरण के द्विभाजित सिद्धांत, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया, 'परंपरा' और 'आधुनिकता' के आदर्श–प्रकारों

के बीच एक विकासवादी संबंध प्रस्तुत किया। इस दृष्टिकोण की तीन स्तरों पर आलोचना की गईः (i) वैचारिक, (ii) आनुभविक, और (iii) कार्यप्रणाली।

1. वैचारिक आलोचनाः द्विबीजपत्री परंपरा की अत्यधिक आलोचना की गई क्योंकि यह एक नृजातीय विश्वदृष्टि की उपज थी। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में सामाजिक विकासवादियों ने एक द्विभाजित दृष्टिकोण विकसित किया। आलोचकों ने सिद्धांत के स्पष्ट नस्लवाद की निंदा की है। इस प्रकार, राजनीतिक वैज्ञानिकों ने अभिविन्यास के प्रति द्विभाजित दृष्टिकोण की विचारधारा और शब्दावली की आलोचना की। विद्वानों ने तर्क दिया है कि 'आधुनिक' का अर्थ पश्चिम पर निर्भरता के बिना पश्चिमी होना है। आधुनिक सिद्धांतकारों ने विकासशील देशों की प्रचलित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार गैर–पश्चिमी समाजों का विश्लेषण किया है (बेंडिक्स, 1967, रूडोल्फ और रूडोल्फ, 1967, टिप्स 1973)। द्विभाजित दृ–ष्टिकोण को परंपरा–आधुनिकता के विपरीत आकार दिया गया है और राजनीतिक आधुनिकीकरण विद्वानों को आधुनिक राजनीतिक प्रणालियों पर एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण रखने में सक्षम बनाया। आधुनिकीकरण सिद्धांत की वैचारिक आलोचना ने संज्ञान, प्रेरणा और उद्देश्यों को संबोधित किया है। आधुनिकीकरण सिद्धांत के वैचारिक आधारों के विश्लेषण से इसकी आनुभविक कमियों की भविष्यवाणी करने में आसानी होगी। इस प्रकार, वैचारिक आलोचना को अन्य महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों (टिप्स 1973) द्वारा पूरक किया गया।

2. आनुभविक आलोचनाः परिवर्तन की प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप समाजों के परिवर्तन का विश्लेषण करने के लिए राजनीतिक आधुनिकीकरण के सिद्धांतों की आलोचना की गई है (बेंडिक्स, 1967, कोलिन्स, 1968, निस्बेट, 1969, टिप्स 1973)। राजनीतिक संज्ञान और आधुनिकीकरण ने संस्कृति और सामाजिक संरचना के स्वदेशी पहलुओं पर व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित किया है। आधुनिकीकरण सिद्धांतकारों ने राजनीतिक व्यवस्था पर व्यावहारिक पहलुओं और बाहरी स्रोतों या प्रभावों के महत्व की उपेक्षा की है। जैसा कि हंटिंगटन (1971) ने बताया है, "आधुनिकता और परंपरा अनिवार्य रूप से विषम अवधारणाएं हैं। आधुनिक आदर्श निर्धारित किया जाता है, और फिर जो कुछ आधुनिक नहीं है उसे पारंपरिक करार दिया जाता है" (हंटिंगटन (1971)।

3. मेटासैद्धांतिक (नींव, सरंचना या किसी सिदांत के परिणामों की दार्शनिक चर्चा) आलोचनाः अंतिम आलोचना पद्धतिगत, या 'मेटासैद्धांतिक' है, और इसने राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित किया है। आधुनिकीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें मानव विचार और गतिविधि के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन शामिल हैं (हंटिंगटन, 1968ः 32)। दुर्खीम ने अगस्टे कॉम्टे के विकासात्मक सिद्धांत की निंदा की है। सामाजिक वैज्ञानिकों ने राजनीतिक आधुनिकीकरण के सैद्धांतिक और पद्धतिगत आधारों की आलोचना की है (टिप्स 1973)।

2.5 तीसरे विश्व के देशों में राजनीतिक व्यवस्था

हटिंगटन (1968) ने अपने मौलिक कार्य "बदलते समाजों में राजनितिक व्यवस्था" में राजनीतिक आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण को चुनौती दी है। हंटिंगटन ने विश्लेषण किया है कि राजनीतिक विकास और आर्थिक आधुनिकीकरण समान नहीं हैं, बल्कि अलग–अलग प्रक्रियाएं हैं। इसके अतिरिक्त, स्थिर लोकतंत्रों की ओर अग्रसर होने की अपेक्षा, तेजी से

सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास राजनीतिक संस्थानों के क्षय का कारण बनेंगे। आधुनिकीकरण ने देखा है कि आर्थिक विकास के आरंभिक चरणों में उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप उच्च आकांक्षाएँ होंगी जिन्हें पूरा करने में राजनीतिक संस्थाएँ असमर्थ हैं। इससे राजनीतिक प्रणाली का पतन होगा (हंटिगटन 1968; सोखी 2011)। इसलिए हंटिंगटन ने तर्क दिया है कि एक स्थिर सत्तावादी प्रणाली एक अस्थिर लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली से बेहतर है। कुछ विद्वानों ने तर्क दिया है कि इसने लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों में राजनीतिक आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण के महत्व को कम कर दिया है।

2.5.1 लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया

आधुनिकीकरण समाजों के लोकतांत्रीकरण की प्रक्रिया में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में समाज अधिक युक्तिसंगत और धर्मनिरपेक्ष हो गए हैं। औद्योगीकरण ने श्रम विभाजन को शामिल किया, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन हुआ और आर्थिक विकास हुआ। आर्थिक समृद्धि लोकतंत्रीकरण के लिए जगह बनाती है क्योंकि आर्थिक स्वतंत्रता राजनीतिक स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए राजनीतिक प्रणाली पर दबाव बनाती है। औद्योगिक क्रांति ने पूंजीवाद को प्रोत्साहन दिया, जिसने एक व्यापारी वर्ग का निर्माण किया। व्यापारी वर्ग कराधान और संपत्ति के अधिकारों पर अधिक नियंत्रण चाहता है और एक प्रतिनिधि, सीमित और जवाबदेह सरकार के लिए कड़ी मेहनत करता है। इस प्रकार युक्तिकरण, धर्मनिरपेक्षीकरण और औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप लोकतंत्रीकरण हुआ। वास्तविक लोकतंत्र लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी के लिए एक वातावरण बनाने पर केंद्रित है।

इसने नीति क्षेत्र और शैक्षिक सिद्धांतों के बीच संबंध को चित्रित किया है। अपनी पुस्तक "नागरिक संस्कृति" (1963) में, आलमंड और वर्बा ने लोकतांत्रिक प्रणालियों के लिए पूर्वापेक्षाएँ विस्तृत की हैं। अपने आर्थिक विकास के चरणों में, रोस्टो ने दक्षिण वियतनाम और इंडोनेशिया में साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए एक नीतिगत रूपरेखा तैयार करने का सुझाव दिया। रोस्टो ने तर्क दिया कि आर्थिक विकास के लिए नीतियां लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों के सफल कामकाज के लिए पूर्वापेक्षा हैं। अपनी तृतीय लहरः "20वी सदी के अंत में लोकतंत्रीकरण" (1991) में, हंटिंगटन ने कहा है कि स्थिर राजनीतिक प्रणालियों में लोकतंत्र का विकास होगा। हालाँकि, आर्थिक विकास लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों को स्थापित करने के लिए जिम्मेदार एकमात्र कारक नहीं हो सकता है (सोखे 2011)

राजनीतिक जीवन रक्षा के तर्क में, ब्रूस ब्यूनो डी मेस्किटा (2003) ने राजनीतिक शासन के प्रकारों और विदेश नीति के लिए उनके निहितार्थ का विश्लेषण किया है। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, प्रेस की स्वतंत्रता, मानवाधिकार और नागरिक स्वतंत्रता ने लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली की स्थापना में बहुत योगदान दिया है। यह अनुशंसा की गई है कि राजनीतिक नेताओं को स्थिर लोकतांत्रिक प्रणाली स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए (मेस्किटा 2003)। एरोन एसेमोग्लू और जेम्स रॉबिन्सन (2006) ने अपनी पुस्तक "तानाशाही और लोकतंत्र की आर्थिक उत्पत्ति" में सुझाव दिया है कि लोकतंत्र की सफलता राजनीतिक अभिजात वर्ग की प्रकृति पर निर्भर करती है। (सोखी 2011)। ये सभी सुझाव देते हैं कि राजनीतिक आधुनिकीकरण के आरंभिक दिनों के दौरान आर्थिक विकास

और लोकतंत्र के बीच संबंध माने जाते थे जो निरंतर समकालीन तुलनात्मक राजनीति में गूंजते रहे।

बोध प्रश्न 2

नोट i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तरों से अपने उत्तरों की जाँच करें।

1) राजनीतिक आधुनिकीकरण के लिए निर्भरता सिद्धांत द्वारा प्रस्तुत चुनौती की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

....

....

2) तृतीय विश्व के समाजों में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

2.6 सारांश

राजनीतिक आधुनिकीकरण का अर्थ है सामंती और पारंपरिक संरचनाओं और संस्कृतियों को त्यागना। यह धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक सत्ता स्थापित करके धर्म और चर्च के वर्चस्व से भी स्वतंत्र हो रहा है। यह पारंपरिक राजनीतिक प्रणाली को आधुनिक में बदलने की प्रक्रिया है। राजनीतिक संस्कृति और राजनीतिक संस्थानों में परिवर्तन ने विकास और बेहतर प्रदर्शन मानकों को जन्म दिया है। राजनीतिक आधुनिकीकरण ने समकालीन वैश्विक दुनिया में लोकतंत्र, औद्योगीकरण और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजनीतिक आधुनिकीकरण दृष्टिकोण ने राजनीतिक प्रणालियों में राजनीतिक परिणामों और प्रक्रियाओं की व्याख्या की है।

इसके अलावा, राजनीतिक आधुनिकीकरण के विश्लेषण को संरचना के द्वैत की सहायता से समझाया गया है। राजनीतिक आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण ने 1970 के दशक में अपनी विश्वसनीयता खो दी थी क्योंकि सैन्य और सत्तावादी शासन अधिकांश विकासशील देशों में

बह गए थे। यह निर्भरता सिद्धांत था जो सामने आया था। हालांकि, राजनीतिक आधुनिकीकरण का पुनरुद्धार हुआ है। अब यह स्वीकार किया जा रहा है कि सामाजिक संरचनाओं और सामाजिक मूल्यों को निर्धारित करने में राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया का व्यक्ति की राजनीतिक प्रणाली, राजनीतिक भर्ती और राजनीतिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए आर्थिक विकास और लोकतंत्र के रूपों को फिर से परिभाषित किया जा रहा है। समाज में स्वतंत्रता और राजनीतिक प्रणाली के आधार पर लोकतंत्र और आर्थिक विकास का विश्लेषण किया जाना है। राजनीतिक आधुनिकीकरण से लोकतंत्रीकरण होगा जो नागरिकों को समृद्ध करेगा।

2.7 संदर्भ

आलमंड, जी।, और वर्बा, एस। (1963)। द सिविक कल्चरः पॉलिटिकल एटिट्यूड एंड डेमोक्रेसी इन फाइव नेशंस। प्रिंसटन, एनजेः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

एल्विन वाई। सो। (1990)। सोशल चेंज एंड डेवलपमेंटः मॉर्डनाइजेशन, डिपेंडेंसी, एंड वर्ल्ड–सिस्टम थिओरीज़. नई दिल्ली; सेज पब्लिकेशंस इंडिया

डेउतसच, क. (1961). सोशल मोबिलाइजेशन एंड पोलिटिकल डेवलपमेंट. अमेरिकन पोलिटिकल साइंस रिव्यु, 55(3),

ऐसेनस्टाड्ट, स. न.(1966) मॉर्डनाइजेशनः प्रोटेस्ट एंड चेंज. एंगलेवुड क्लिफ्फ्स, नजः प्रेन्टिस–हॉल .

फ्रेंक,ऐ. जी.(1970). द डेवलपमेंट ऑफ अंडरडवेळपमेट. इन आर. रोडेज (इडी.), इम्पेरिअलिस्म एंड अंडरडवेळपमेट ए रीडर न्यू यॉर्कः मंथली रिव्यु प्रेस.

हंटिंग्टन, एस .(1968). पोलिटिकल आर्डर इन चेंजिंग सोसाइटीज. न्यू हैवन, सी टीः येल यूनिवर्सिटी प्रे.स

इंगेलहार्ट, आर.(1990). कल्चर शिफ्ट इन एडवांस्ड इंडस्ट्रियल सोसाइटी, प्रिंसटोन, एन.जे. प्रिंसटोन यूनिवर्सिटी प्रेस.

लिप्सेट, एस. एम.(1960). 'इकनोमिक डेवलपमेंट एंड डेमोक्र े.सी इन एस. म. लिप्सेट (ई डी.), पोलिटिकल मैनः द सोशल बेसेस ऑफ़ पॉलिटिक्स. न्यू यॉर्कः एंकर बुक्स.

रॉबिंसन, जै. (2006). 'इकनोमिक डेवलपमेंट एंड डेमोक्र े.सी'. एनुअल रिव्यु ऑफ़ पोलिटिकल साइंस, 9, 503 527.

स्मिथ बी.सी. (2003). अंडरस्टैंडिंग थर्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्सः थेओरिज़ ऑफ़ पोलिटिकल चेंज एंड डेवलपमेंट. न्यू यॉर्कः पलग्रैवे

सोखे सराह विल्सन.(2011). 'पोलिटिकल डेवलपमेंट एंड मॉर्डनाइजेशन '. इन 21वी सेंचुरी पोलिटिकल साइंसः ऐ रिफरेन्स हैंड बुक. लंदनः सेज.

टिप्पस, द. (1973).' मॉर्डनाइजेशन थ्योरी एंड द कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ सोसाइटीजः ऐ क्रिटिकल पर्सपेक्टिव', कम्पेरेटिव स्टडीज इन सोसाइटी एंड हिस्ट्री, वॉल्यूम.15.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) विकासवादी सिद्धांत ने राजनीतिक आधुनिकीकरण प्रतिमान को आकार दिया है जो 1950 के दशक में गैर–पश्चिमी देशों के अध्ययन पर प्रबल था। इसने राजनीतिक आधुनिकीकरण को पारंपरिक से आधुनिक समाज में परिवर्तन के संदर्भ में समझाया। यह सिद्धांत औद्योगिक क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति का परिणाम था। इन दो क्रांतियों ने पुरानी सामाजिक व्यवस्था को नष्ट कर दिया और एक नए की नींव रखी।

बोध प्रश्न 2

1) निर्भरता सिद्धांत ने तर्क दिया कि आर्थिक विकास सामाजिक गतिशीलता को कमजोर कर सकता है और लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली का उदय हुआ। निर्भरता सिद्धांत ने बताया है कि वैश्विक दुनिया के आर्थिक विकास में इसकी ऐतिहासिक भूमिका के आधार पर देश के विकास की व्याख्या की जाएगी। निर्भरता के अनुसार विकास और अल्पविकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और एक के विकास ने दूसरे के अविकसितता को जन्म दिया।

2) विभिन्न विद्वानों ने अपने मौलिक कार्यों में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या की है। हंटिंगटन की तृतीय लहरः "20वी सदी के अंत में लोकतंत्रीकरण (1991)" ने यह चित्रित किया है कि लोकतंत्र का स्थिर राजनीतिक प्रणालियों में विकास होगा। एक लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के सफल संचालन के लिए आर्थिक विकास की नीतियां एक पूर्वापेक्षा है। आर्थिक विकास लोकतंत्रीकरण की ओर ले जाएगा।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई– 3 राजनीतिक विकास*

संरचना

3.0 उद्देश्य
3.1 परिचय
3.2 आधुनिकीकरण सिद्धांत एवं राजनीतिक विकास
3.2.1 आर्थिक दृष्टिकोण
3.2.2 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण
3.2.3 राजनीतिक दृष्टिकोण
3.3 निर्भरता का सिद्धांत
3.4 राज्यवाद
3.5 लोकतंत्रीकरण
3.6 सारांश
3.7 संदर्भ
3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई तुल्नात्मक राजनीति में राजनीतिक विकास दृष्टिकोण की उत्पत्ति एवं विकास की व्याख्या के उद्देश्य से लिखी गई है। यह तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन करने के लिए राजनीतिक विकास का एक दृष्टिकोण के रूप में विश्लेषण करेगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न में सक्षम होंगेः–

- तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक विकास अध्ययन के उद्भव का अनुरेखण करने में
- राजनीतिक विकास पर अध्ययन को आकार प्रदान करने वाले आधुनिकीकरण, निर्भरता तथा राज्यवाद के सिद्धांतों का वर्णन करने में तथा
- राजनीतिक विकास दृष्टिकोणों क महत्व का आंकलन करने में।

---

*डॉ. चाक्रली ब्रम्हय्या, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान और मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), अमरकंटक, मध्य प्रदेश

3.1 परिचय

1960 के दशक में राजनीतिक विकास को तुलनात्मक राजनीति के एक उपक्षेत्र के रूप में मान्यता मिली। इसकी जड़ें आधुनिकीकरण सिद्धांत में हैं, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात के वर्षो में सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया था। 1960 के दशक से पूर्व, तुलनात्मक राजनीति में सरकार के उन रूपों पर ध्याान केंद्रित करने की प्रवृत्ति थी, जो उन्नत औद्योगिक दुनिया अर्थात यूरोप एवं पूर्व सोवियत संघ में प्रचलित थे। हालांकि, यूरोप के विखंडन के बाद और संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ के मध्य शीत युद्ध संघर्ष के परिणामस्वरूप एशिया और अफ्रीका में कई राज्यों के प्रादुर्भाव ने विकास के वैकल्पिक मार्ग प्रदान किए, तुलनात्मक राजनीति ने अपना ध्यान जिस पर केंद्रित करना आरम्भ किया उसे 'नए', 'उभरते', 'अविकसित' या 'विकासशील' राष्ट्रों के रूप में जाना जाता हैं। आधुनिकीकरण सिद्धांत के सामाजिक विज्ञान में एक नए प्रतिमान के रूप में उभरने के साथ, तुलनात्मक राजनीति पर अध्ययन आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन एवं लोकतंत्रीकरण के मध्य संबंधों के साथ पूर्व से ही तल्लीन हो गया। 1960 के दशक के आरम्भ में जब राजनीतिक आधुनिकीकरण अमेरिका में तुलनात्मक राजनीतिक अध्ययन का विषय बन गया, तो इस शब्द का उपयोग राजनीतिक विकास के पर्याय के रूप में किया जाने लगा। राजनीतिक विकास को लोकतांत्रिक राजनीति के एक और संक्रमण के रूप में देखा गया, जैसा कि हित समूहों की गतिविधि में वृद्धि, नौकरशाही और राजनीतिक दलों के विकास एवं लोकतांत्रिक संस्थानों की क्षमताओं के विकास में दिखाई देता है।

निर्भरता सिद्धांत जो लैटिन अमेरिका में आधुनिकीकरण सिद्धांत के साथ–साथ विकसित हुआ, उसने 1970 के दशक में तुलनात्मक राजनीति में स्वयं को एक प्रमुख व्याख्यात्मक सिद्धांत के रूप में स्थापित करते हुए, आधुनिकीकरण सिद्धांत को प्रतिस्थापित कर दिया। जैसा कि हम देखेंगे कि निर्भरता सिद्धांत ने बाह्य अवरोधों पर विशेष ध्यान आकर्षित किया, विशेषतौर से वैश्विक पूंजीवाद द्वारा राजनीतिक विकास के मार्ग में खड़े किए गए अवरोधों पर।

हालांकि, कई एशियाई देशों और लैटिन अमेरिका में अर्जेंटीना ने तीव्र आर्थिक विकास दर्ज किया, जिससे निर्भरता सिद्धांत ने व्याख्यात्मक सिद्धांत के रूप में अपनी विश्वसनीयता खो दी। 1980 के दशक में राजनीतिक विकास की व्याख्या करने के लिए राज्यवाद एक नए परिपेक्ष्य में उभरा। लेकिन यह वह कालखण्ड भी था, जब लोकतंत्रीकरण की एक नई लहर सभी महाद्वीपों में फैल गई थी, जिसने सैन्य, सत्तावादी और कम्युनिस्ट शासन को कमजोर किया और प्रायः समाप्त कर दिया। इस इकाई में, हम तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक विकास पर अनुसंधान को आकार देने में आधुनिकीकरण, निर्भरता और राज्यवाद के प्रभाव का परीक्षण करते हैं।

3.2 आधुनिकीकरण सिद्धांत और राजनीतिक विकास

तुलनात्मक राजनीति में, राजनीतिक विकास को सैद्धांतिक जामा पहनाने का स्पष्ट प्रयास 1950 के दशक के उत्तरार्ध में प्रारम्भ हुआ। इन प्रयासों को आधुनिकीकरण सिद्धांत द्वारा आकार दिया गया था, जिसके विषय में आप पिछली इकाई में पढ़ चुके हैं। आधुनिकीकरण

को दो सिद्धांतो— विकासवादी एवं कार्यात्मक सिद्धांतों द्वारा बनाया गया था। विकासवादी सिद्धांत की मूल धारणा यह थी कि सामाजिक परिवर्तन एक समान दिशा में, प्रगतिशील और क्रमिक, अपरिवर्तनीय रूप से एक आदिम चरण से एक उन्नत चरण के मार्ग पर चलने वाला प्रतिरूप है और वे विकास के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए समाजों को एक दूसरे के जैसे बनाते हैं। धारणाओं का दूसरा सेट प्रकार्यवादी सिद्धांत से आया, जिसने संस्थानों की अन्योन्याश्रयता, सांस्कृतिक स्तर पर चरों के प्रतिरूपो के महत्व और समस्थैतिक संतुलन के माध्यम से परिवर्तन की अंतर्निहित प्रक्रिया पर जोर दिया।

जैसा कि हमने पिछली इकाई में देखा, विकास, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र में परिवर्तन के बारे में विचारों को आधुनिकीकरण सिद्धांत द्वारा विश्व युद्ध के बाद के वर्षो में आकार दिया गया था।

3.2.1 आर्थिक दृष्टिकोण

अर्थशास्त्र में कार्ल पोलानी के कार्य द ग्रेंड ट्रांसफारलेशन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अध्ययन के विषय के रूप में विकास वृहत स्तर पर उभरा। 1950 के दशक में, ब्रूस मॉरिस और एवरेट वॉन हेगन एवं 1960 के दशक में डब्लू. डब्लू. रोस्टो और रॉबर्ट हेइलब्रोनर ने उभरते देशों में आर्थिक विकास पर कार्य किया। इन अध्ययनों में, पश्चिम के समृद्ध एवं विकसित देश (संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय राष्ट्र) संदर्भ बिंदु बन गए। यह मान लिया गया था कि कम विकसित देश विकास के लिए उसी प्रक्षेप चक्र का अनुसरण करेंगे और अंततः उन्नत देशों के साथ के स्तर को पकड़ लेगें। डब्लू. डब्लू. रोस्टो का आर्थिक विकास के चरण विकास की इसी सोच का उदाहरण हैं। इस पुस्तक में रोस्टो ने तर्क दिया कि विकास के पांच चरण थे जिनसे होकर सभी देश गुजरते थे। पारंपरिक समाजों को कृषि उत्पादन की प्रधानता और सीमित उत्पादकता की विशेषता के रूप में जाना जाता है। ऊपर उठने की पूर्व शर्त दूसरा चरण है जो वैज्ञानिक नवाचारों के परिणामस्वरूप होता हैं, जिसकी वजह से अधिशेष प्राप्त होता हैं जिसका उपयोग निवेश के लिए किया जा सकता हैं। ऊपर उठने का चरण आत्मनिर्भर विकास का एक चरण हैं, जब विनिर्माण उद्यमशील अभिजात वर्ग द्वारा आरम्भ किया गया, जो विकास की प्रेरक शक्ति बन जाता हैं। परिपक्वता के लिए अभियान विकास के मूल क्षेत्रों को नए क्षेत्रों से प्रतिस्थापित करने की ओर ले जाता है, उदाहरणार्थ— अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रांति के दौरान भारी उद्योग। अंतिम चरण लोगों द्वारा उच्च खपत का दौर है जो उत्पादन के बजाय खपत पर जोर देती है। रोस्टो ने तर्क दिया कि किसी राष्ट्र के विकास में राजनीतिक रूप से सबसे कठिन अवधि ''पूर्व शर्त'' का चरण था। इस चरण के दौरान, पारंपरिक समाज और परिचारक मनोवैज्ञानिक असुरक्षाओं का सामाजिक विस्थापन तेज होगा, लेकिन आधुनिकीकरण के कुछ ठोस भौतिक लाभ अभी भी प्रकट हो रहे होंगे।

रोस्टो के विकास के चरण और विकास की प्रेरक शक्ति के रूप में आर्थिक कारकों पर जोर ने चिरसम्मत मार्क्सवादियों के साथ समानताएं साझा कीं, जिन्होंने सामंतवाद से पूंजीवाद और फिर समाजवाद में संक्रमण के बारे में चर्चा की थी। हालांकि, जबकि मार्क्स ने इस बात पर जोर दिया कि संक्रमण एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के माध्यम से होता है और आवश्यकता अतीत के साथ स्पष्ट नाता तोड़ लेती है, जिसे अक्सर पहले के चरणों के हिंसक विनाश की विशेषता माना गया। रोस्टो जिन्होंने अपने कार्य को 'गैर—कम्युनिष्ट घोषणापत्र' के रूप में वर्णित किया, उन्होंने देखा कि सभी देशों के लिए विकास का सुगम

और एकरेखीय मार्ग है। रोस्टो की तरह, अन्य अर्थशास्त्री जो 1960 के दशक में आर्थिक विकास की योजनाएं सृजित कर रहे थे, उनका मानना था कि विकास की समस्याएं आंतरिक है तथा बाह्य प्रोत्साहनों, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास एवं उद्यमिता के माध्यम से हल की जा सकती हैं। उन्होंने यह भी माना कि राजनीतिक और सामाजिक विकास, आर्थिक विकास एवं औद्योगिकीकरण का अनुसरण करेगा।

3.2.2 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

जैसा कि हमने पिछली इकाई में देखा, टैल्कॉट पार्सन्स ने आधुनिक और पारंपरिक समाजों की तुलना करने के लिए श्रेणियों के समूह को उन्नत किया, जिसे उन्होंने का प्रतिरूप चर कहा। यद्यपि पार्सन्स ने इन प्रतिरूप चरों को आदर्श प्रकारों के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि वास्तविक समाजों में आरोपण और योग्यता, विशिष्टता एवं सार्वभौमिकता, तथा प्रसार और विशिष्टता का मिश्रण था, लेकिन अधिकांश समाजशास्त्रीय अध्ययनों में अनुपयुक्त विपरीतता को स्थान मिला। उदाहरणार्थ, डैनियल लर्नर, जिन्होंने मध्य–पूर्व में आधुनिकीकरण और विकास पर संचार के विस्तृत हुए साधनों के प्रभाव का अध्ययन किया, उन्होंने माना कि पांरपरिकता से आधुनिकता में संक्रमण एकरेखीय था, अर्थात सभी देश पांरपरिक प्रणालियों से आधुनिक प्रणालियों की ओर बढ़ेंगे। दूसरे शब्दों में, नए संचार माध्यमों की शुरूआत के परिणामस्वरूप आधुनिकीकरण होगा जिसके फलस्वरूप अनिवार्य रूप से समतावाद, लोकतंत्र आदि का उदय होगा। इसी तरह, सामाजिक लामबंदी पर ध्यान केंद्रित करने वाले कार्ल ड्यूश ने निष्कर्ष निकाला कि समाज को विकसित या लोकतांत्रिक बनने से पहले कुछ सामाजिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना आवश्यक हैं। ये सामाजिक आवश्यकताएं थीं–उच्च साक्षरता, आर्थिक विकास, किसानों और श्रमिको की लामबंदी, आधुनिक संचार इत्यादि। इस प्रकार, 1960 के दशक के प्रारम्भ तक, कई समाजशास्त्रियों को यह विश्वास हो गया था कि आर्थिक विकास का परिणाम सामाजिक लामबंदी में होगा, जो लोकतंत्र की ओर अग्रसर होगा। अर्थशास्त्रियों की तरह, समाजशास्त्री विकास में राजनीतिक कारकों के विषय में मौन थे।

3.2.3 राजनीतिक दृष्टिकोण

अपने विकास के प्रांरभिक चरणों में, राजनीतिक विकास ने आधुनिकीकरण की धारणाओं को साझा किया जो पहले से ही अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र द्वारा ग्रहण की जा चुकी थी। उदाहरणार्थ, 1960 के दशक में लगभग सभी अध्ययनों ने राजनीतिक रूप से विकसित राज्य को लोकतांत्रिक माना। वे राजनीतिक विकास को लोकतंत्र की ओर संक्रमण की प्रक्रिया मानते थे। जैसा कि हमने इकाई दो में देखा कि सीमोर पी लिपसेट ने राजनीतिक लोकतंत्र के उद्‌भव पर अपने विशिष्ट कार्य एवं कृति पोलैटिकल मैन (1959) में तर्क दिया था कि आर्थिक आधुनिकीकरण (औद्योगीकरण) और राजनीतिक लोकतंत्र के विकास के मध्य एक सीधा संबंध था। उनका मानना था कि आर्थिक आधुनिकीकरण ने राजनीतिक लोकतंत्र (एक वृहत, जीवंत एवं साक्षर मध्यम वर्ग और संम्पदा) के उदय हेतु सामाजिक आवश्यकताओं का सृजन किया। दूसरों ने आर्थिक विकास और राजनीतिक लोकतंत्र के मध्य संबंधों की व्याख्या करने में अधिक बारीकियां दीं। उदाहरण के लिए, कार्ल ड्यूश (1961) ने अपनी कृति 'सोशल मोबिलाइजेशन एंड पॉलिटिकल डेवलपमेंट' में तर्क दिया कि औद्योगिकरण और आर्थिक आधुनिकीकरण जरूरी नहीं कि राजनीतिक लोकतंत्र के

विकास की ओर ले जाए, जैसा कि लिपसेट ने 1959 में तर्क दिया था। इसके बजाय, वे इस प्रक्रिया में पुरानी सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिबद्धताओं के क्षरण की ओर ले जाती है तथा इस प्रक्रिया में समाजीकरण एवं व्यवहार के नए पैटर्न का सृजन करती है, और जिससे लोग धीरे–धीरे अपनी स्थानीय ग्रामीण पहचान को छोड़ सकते है और राष्ट्र के साथ अपनी पहचान को जोड़ सकते है।

सामाजिक लामबंदी मौजूदा राजनीतिक प्रणालियों पर दबाव उत्पन्न करती हैं जिसके परिणामस्वरूप हिंसा, सामाजिक अव्यवस्था या राजनीतिक अस्थिरता होती हैं जो इस बात पर निर्भर करती है कि राजनीतिक व्यवस्था उन दबावों से कैसे निपटती हैं। अल्मांड और कोलमैन ने अपने प्रभावशाली कृति 'द पॉलिटिक्स ऑफ द डेवलपिंग एरियाज़ (1960)' में तर्क दिया कि आर्थिक आधुनिकीकरण 'संकट' पैदा करता है जिसका समाधान व्यवस्था को करना चाहिए। इस खंड में, गेब्रियल आलमंड ने राजनीति का अध्ययन करने के लिए एक कार्यात्मक रूपरेखा भी प्रस्तुत की, जिसे तुलनात्मक राजनीति पर बनी समिति (सीसीपी) से बहुत अधिक समर्थन मिला। सीसीपी के कई सदस्यों जैसे लुसियन पाइ, मायरोन वेनर, जोसेफ ला पालोमबारा, रॉबर्ट वार्ड, सिडनी वर्बा, लियोनार्ड बाइंडर और जेम्स कोलमैन ने राजनीतिक विकास से संबंधित कई विषयों का अध्ययन किया।

एफ ए ऑर्गन्सकी (द स्टेज़स् ऑफ पोलिटकल डेवलपमेंट, 1965) और बैरिंगटन मूर (द सोशल ओरिजिन ऑफ डेमोक्रेसी एंड डिक्टेटरशिप, 1966) जैसे कुछ लोगों ने राजनीतिक विकास का विश्लेषण करने के लिए एक ऐंतिहासिक दृष्टिकोण अपनाया। अधिकांश अन्य लोगों ने राजनीतिक विकास की व्याख्या के लिए संरचनात्मक, कार्यात्मक ढांचे का उपयोग किया। उनमें से प्रमुख हैं– अल्मांड और वर्बा (द सिविक कल्चरः पॉलिटिकल एटिट्यूड एंड डेमोक्रेसी इन फाइव नेशंस, 1963), लुसियन पाइ (आस्पेक्ट ऑफ पोलिटिकल डेवलपमेंट, 1966) और डेविड एप्टर (द पालिटिक्स ऑफ माडरनाइजेशन, 1965)। इन सभी अध्ययनों में जो बात समान है वह यह है कि वे आधुनिकीकरण सिद्धांत की धारणाओं को साझा करते थे कि परिवर्तन रैखिक, प्रगतिशील और क्रमिक होता है तथा अपरिवर्तनीय रूप से आगे बढ़ने वाले समाजों को एक उन्नत चरण की ओर ले जा रहा हैं एवं समाजों को एक दूसरे की तरह बना रहा हैं।

राजनीतिक विकास के दृष्टिकोण और आधुनिकीकरण दृष्टिकोण में दरार 1960 के दशक के उत्तरार्ध में मुख्य रूप से सैमुअल पी हंटिगटन के कार्यो से आयी। अपने लेखन में, विशेष रूप से 'पॉलिटिकल ऑर्डर इन चेंजिंग सोसाइटीज़स' (1968) में, हंटिगटन ने इस धारणा को खारिज कर दिया कि आधुनिकीकरण एक प्रगतिशील, एक केंद्राभिमुख या अपरिहार्य बल था। उनके अनुसार, आर्थिक विकास ने गहरा सामाजिक परिवर्तन किया, लेकिन ये परिवर्तन आवश्यक रूप से सौम्य या प्रगतिशील नहीं थे। उन्होंने तर्क दिया कि आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के बीच समाज लोगों को बेहतर जीवन के लिए बढ़ी हुई उम्मीदों की ओर ले जाता हैं। जब राजनीतिक संस्थान ऐसी अपेक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ होते हैं, तो राष्ट्रीय स्तर पर निराशा और हताशा होना स्वाभाविक हैं, जिससे अव्यवस्था या क्रांति भी हो सकती है। इसलिए हंटिंगटन ने राजनीतिक विकास को राजनीतिक संगठनों और प्रक्रियाओं के संस्थागतकरण के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने राजनीतिक विकास को सरकारी संस्थानों की ताकत या क्षमता के साथ पहचाना– ''जो कुछ भी सरकारी संस्थानों को मजबूत करता हैं'' (हंटिगंटन 1965: 393)। हंटिगंटन के लिए, आर्थिक विकास के लिए राजनीतिक व्यवस्था आवश्यक थी। इस प्रकार उन्होंने

आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन पर राजनीतिक विकास या व्यवस्था को प्राथमिकता दी। सैमुअल बीयर ने विकास के लिए एक समान, गैर–लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने तर्क दिया कि राजनीतिक विकास नौकरशाही राज्य के विस्तार के बराबर है। उनकी पुस्तक 'पैटर्न ऑफ गवर्नमेंटः द मेजर पॉलिटिकल सिस्टम ऑफ यूरोप (1973)' में कहा कि आर्थिक विकास सामाजिक जटिलता और विशेषज्ञता एवं विभाजन (जिसे वह हितों के पैटर्न के रूप में कहते हैं) की आवश्यकता की ओर ले जाता हैं। रूचि के ये पैटर्न अधिक विशेषज्ञता एवं नौकरशाही (जिसें वे सत्ता के पैटर्न कहते है) की मांग पैदा करते हैं। सत्ता के नए पैटर्न का निर्माण उन्हें अपने स्वयं के हितों को उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करता है, जो पंहुच एवं प्रतिनिधित्व की नई मांग करता है, जो शक्ति का अंनतकाल तक एक नया पैटर्न बनाता है। इसलिए राजनीतिक विकास के परिणामस्वरूप राज्य की गतिविधियों के क्षेत्र में भिन्नता एवं विस्तार होता है।

इस प्रकार 1960 के दशक के अंत तक तुलनात्मक राजनीति के विद्यार्थियों को राजनीतिक विकास की विभिन्न परिभाषाओं से रूबरू होना पड़ा। लुसियन पाई ने एक बार राजनीतिक विकास शब्द का उपयोग दस अलग–अलग तरीकों से किया है। राजनीतिक समाजशास्त्रियों के लिए, राजनीतिक विकास का अर्थ अधिक विभेदीकरण और कार्यो की विशेषज्ञता से था। राजनीतिक वैज्ञानिकों के लिए, राजनीतिक विकास का अर्थ राजनीतिक संस्थाओं जैसे हित समूहों, राजनीतिक दलों, नौकरशाही और इसी तरह की संस्थाओं के विकास से था। अन्य राजनीतिक वैज्ञानिकों ने एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की दिशा में प्रगति के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया। फिर भी, हंटिगंटन जैसे अन्य लोगों ने इस शब्द की तुलना स्थिरता और व्यवस्था से की। जैसा कि वेर्डा और स्केली बताते है, अधिकांश विद्वानों ने ''शायद सभी अर्थो को शामिल किया......विशेषज्ञता एवं भेदभाव, संस्थागतकरण, लोकतंत्र, स्थिरता– इसके बारे में बहुत सटीक हुए बिना'' (पृष्ठ–59)। वास्तव में ' राजनीतिक विकास' का क्या अर्थ है, इस पर आम सहमति की कमी ने परिवर्तन के सिद्धांत को प्रस्तुत करना असंभव बना दिया (एकस्टीन, 1982, पृष्ठ–466, कैममैक, 1997, पृष्ठ 28–30)। राजनीतिक आधुनिकीकरण और विकास को 1960 के दशक में तुलनात्मक राजनीति में तीव्रता से स्वीकृति मिली थी। हालांकि, उस दशक के अंत तक, राजनीतिक विकास के आधार पर आम सहमति का टूटना शुरू हो गया था। जैसा कि वेर्डा और स्केली ने बताया, वृहत समाज में व्यापक परिवर्तन हुए। वह आशावाद जो 1960 के दशक में अमेरिका की विशेषता थी, वह क्षीण होने लगी। वियतनाम में नागरिक अधिकार आंदोलन और युद्ध ने सामाजिक एवं विदेश नीति पर आम सहमति को नष्ट करना आरम्भ कर दिया था। राजनीतिक विकास के उपविषय और क्षेत्र में योगदान देने वाले विद्वानों, दोनों पर ही सवाल उठे। इन परिस्थितियों में, निर्भरता या ''वैश्विक प्रणाली'' सिद्धांत आधुनिकीकरण प्रतिमान के विकल्प के रूप में एक लेंस के रूप में उभरा, जिसके माध्यम से तीसरी दुनिया के देशो में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की व्याख्या की जा सके।

बोध प्रश्न 1

नोटः– i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तरों से अपने उत्तरों की जांच करें।

1. कार्ल ड्यूश के अनुसार राजनीतिक विकास के लिए आवश्यक सामाजिक पूर्व शर्त क्या हैं ?

....
....
....
....
....

3.3 निर्भरता सिद्धांत

निर्भरता सिद्धांत का मुख्य तर्क यह था कि वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में किसी देश की ऐतिहासिक भूमिका पर विचार करके ही विकास की व्याख्या की जा सकती है।

लैटिन अमेरिकी निर्भरता सिद्धांत में दो प्रकार की वैचारिक स्थितियां शामिल थी–सुधारवादी और मार्क्सवादी। सुधारवादी स्थिति कार्डोसो, फालेटो और फर्टाडो जैसे लेखकों के कार्य में परिलक्षित होती है, जबकि मार्क्सवाद से प्रेरित निर्भरता के सिद्धांतकारों में आंद्रे गुंडर फ्रैंक, डॉस सैंटोस और मारिनी शामिल हैं। वेर्डा और स्केली बताते है कि इन दो वैचारिक समूहों और मार्क्सवादी स्थिति की प्रबलता के कारण, 'यह स्पष्ट नहीं था कि निर्भरता तुलनात्मक राजनीति में एक नया और गंभीर दृष्टिकोण था या केवल एक राजनीतिक स्थिति''। (के, पृष्ठ 135)

निर्भरता के सिद्धांतकारों का तर्क है कि लैटिन अमेरिकी राज्य अपने घरेलू कारकों के कारण नहीं बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की संरचना के कारण अविकसित हैं। वे वैश्विक अर्थव्यवस्था को दो प्रकार के राज्यों से मिलकर बनी हुई मानते हैः– केन्द्रीय और परिधीय, महानगरीय और अनुगामी, विकसित और अविकसित तथा प्रमुख और आश्रित। केंद्र में यूरोप और अमेरिका के उन्नत औद्योगिक राज्य शामिल हैं, जबकि परिधि एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के विकासशील राज्यों से निर्मित है। फ्रैंक के अनुसार विकास और अल्पविकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक ही प्रक्रिया के दो ध्रुव है– वैश्विक स्तर पर महानगरीय पूंजीवादी विकास तीसरी दुनिया में ''अल्पविकास का विकास'' पैदा करते है। निर्भरता सिद्धांत के विश्लेषण में, लैटिन अमेरिका में आर्थिक विकास का अनुभव तभी हुआ जब महानगरीय संबंध कमजोर हो गए, जैसे कि अंतर्युद्ध काल के दौरान– जब महानगरीय देश युद्ध और महामंदी से ग्रस्त थे। निर्भरता सिद्धांत के अनुसार, केन्द्र और परिधि के बीच आश्रित आर्थिक संबंधों की स्थापना, रखरखाव एवं गहनता का आश्रित देशों में सामाजिक और राजनीतिक विकास की कार्यप्रणाली पर गहन विकृत प्रभाव पड़ा। समीर अमीन (1976), मार्क्सवादी विचार समूह के निर्भरता के सिद्धांतकार ने केंद्र और परिधि के बीच संबंधों का तर्क दिया है, जो सामान्यतः समुद्र–तट के निकट के शहरों में आधुनिकता के परिक्षेत्रों का निर्माण करते हैं जहां आयात/निर्यात अनुसरण किया जाता हैं। इन परिक्षेत्रों में उभरने वाला पूंजीपति वर्ग उस औद्योगिक पूंजीपति वर्ग की तरह नहीं है, जिसने सांमतवाद को समाप्त करने एवं राजनीतिक लोकतंत्र के उदय का मार्ग प्रशस्त करने में यूरोप में प्रगतिशील भूमिका निभाई थी। यह एक दलाल पूंजीपति वर्ग है जो औद्योगिक उत्पादन के बजाय व्यापार से अपनी संपत्ति प्राप्त करता हैं क्योंकि वे इस

प्रणाली से लाभान्वित होते हैं, इसलिए वे व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिए बहुत कम प्रोत्साहित होते है, वे प्रगतिशील भूमिका निभाने से दूर यथास्थिति बनाए रखने के लिए सामंती जमींदारों के साथ गठबंधन मे प्रवेश करते हैं (जिनके साथ उनका सामान्य आर्थिक हित होता है)। इसलिए राजनीतिक लोकतंत्र की संभावनाएं धुंधली होती हैं। 1970 के दशक में, इमैनुअल वालरस्टीन एवं कई अन्य निर्भरता के सिद्धांतकारों ने पूंजीवादी वैश्विक व्यवस्था के इतिहास की एक सामाजिक–वैज्ञानिक व्याख्या विकसित की।

इस वैश्विक–व्यवस्था के दृष्टिकोण ने धीरे–धीरे निर्भरता सिद्धांत के स्थान पर कब्जा कर लिया। वालरस्टीन की 'लंबी सोलहवीं शताब्दी' (1400–1600) के दौरान पूंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था के उदय और विस्तार की ऐतिहासिक–समाजशास्त्रीय व्याख्या श्रम के एकल विभाजन की धारणा के इर्द–गिर्द घूमती हैं। दूसरे शब्दों में, वैश्विक–व्यवस्था में विश्लेषण की इकाई स्वयं विश्व है, न कि राष्ट्र–राज्य, जैसा कि निर्भरता सिद्धांत में है। अपने शोध के मुख्य बिन्दु के संदर्भ में, वैश्विक–प्रणाली परिधि पर ध्यान केंद्रित करने वाले निर्भरता के सिद्धांतकारों के विपरीत परिधि के साथ–साथ केंद्र, अर्ध–परिधि और परिधि पर केंद्रित है।

निर्भरता और वैश्विक–प्रणाली दोनो सिद्धांतकारों की उनके व्याख्यात्मक मॉडल के भौतिक और आर्थिक आयामों पर और विकास प्रक्रियाओं की व्याख्याओं की स्पष्ट रूप से नियतात्मक प्रकृति पर जोर देने के लिए आलोचना की गई है। अतीत में परिधि से केंद्र तक जापान का उदय और 1970 के दशक के उत्तरार्ध में अर्जेंटीना द्वारा अनुभव की गई तीव्र आर्थिक वृद्धि को निर्भरता सिद्धांत द्वारा पर्याप्त रूप से समझाया नहीं जा सका। इसके द्वारा राजनीतिक और आर्थिक विकास के बीच संबंध की व्याख्या ने इसकी अपनी विश्वसनीयता को खो दिया। जबकि निर्भरता सिद्धांत ने अपने व्याख्यात्मक मूल्य को खो दिया, फिर भी इसने अविकसितता के चक्र पर विजय पाने में राज्य की भूमिका को जो महत्व दिया, जिससे 1980 के दशक में राज्यवाद का उदय हुआ।

3.4 राज्यवाद

1980 के दशक की शुरूआत में, निर्भरता को प्रभावित करने वाले विद्वानों ने 'आश्रित विकास' के लिए वैकल्पिक स्पष्टीकरण देना आरम्भ किया। उन्होंने लैटिन अमेरिका के बाहर निर्भरता सिद्धांत की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाया क्योंकि परिधि के देशों जैसे एशियाई टाइगर्स (हांगकांग, ताइवान, दक्षिण कोरिया और सिंगापुर) साक्ष्य के तौर पर उपलब्ध थे। इवांस (डिपेंडेंट डेवलपमेंटः द एलाइंस ऑफ मल्टीनेशनल, स्टेट एंड लोकल कैपिटल इन ब्राजील, 1979), रेउशमेयर एवं स्कोकपोल (ब्रिंगिग द स्टेट बैक इन, 1985) जैसे विद्वानों ने राज्य के नेतृत्व वाले औद्योगीकरण पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया, जो ऐसा प्रतीत होता था कि आर्थिक निर्भरता के बंधनों को तोड़ने में मद्द करता है।

राजनीति के लिए राज्यवादी दृष्टिकोण राज्य की वेबेरियन अवधारणा पर निर्भर करता था, जो राज्य की मार्क्सवादी या उदारवादी धारणाओं से भिन्न थी। मार्क्सवादी अवधारणा में, राज्य शासक वर्गो के हाथों में केवल एक उपकरण की तरह था। उदारवादी अवधारणा वाले राज्य में राज्य एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें विभिन्न हित प्रतिस्पर्धा करते थे। दूसरी ओर, वेबर ने राज्य के विषय में ''एक मानव समुदाय के रूप में सोचा जो किसी दिए गए क्षेत्र के अंतर्गत शारीरिक बल के वैध उपयोग के एकाधिकार का दावा करता हैं'' (वेबर, 1949, पृष्ठ 76)। इस अवधारणा में, राज्य किसी भी अन्य मानव समुदाय की तरह हैं, जिनके

अपने हित हैं। इन हितों में सबसे महत्वपूर्ण है जीवित रहने की आवश्यकता। राज्य आधुनिकीकरण और विकास के लक्ष्यों का अनुगमन करते हैं, ऐसा वे सौम्य चिंताओ के कारण नहीं या आर्थिक वातावरण में हो रहे परिवर्तनों को समायोजित करने के लिए नहीं करते है, बल्कि वे ऐसा या तो आंतरिक रूप से जैसा आधुनिकीकरण सिद्धांत ने सुझाया अथवा बाह्य रूप से जैसा निर्भरता सिद्धांत ने सुझाया को मानते हुए करते है। राज्य मुख्य रूप से बाहरी खतरों, सैन्य खतरों और यहां तक कि आर्थिक संवृद्धि और विकास का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार विकास की राज्यवादी व्याख्या राजनीति को प्राथमिक मानती हैं। राज्य की स्वैच्छिक कार्रवाई के परिणामस्वरूप आर्थिक परिवर्तन संभव है। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक विकास एक स्वतंत्र चर है जो परिवेश पर कार्य करता हैं न कि आधुनिकीकरण और निर्भरता सिद्धांतों द्वारा परिकल्पित एक आश्रित चर पर।

बोध प्रश्न 2

नोटः– i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तरों से अपने उत्तरों की जांच करें।

1) गेब्रियल आल्मंड के अनुसार राजनीतिक व्यवस्थाओं के उत्पादन कार्य क्या हैं ?

....

....

....

....

....

2) निर्भरता सिद्धांत के अनुसार लैटिन अमेरिकी देशों में अल्पविकास के लिए उत्तरदायी कारकों की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

3.5 लोकतंत्रीकरण

एक बड़ी ऐतिहासिक विडंबना में, जैसे ही राजनीतिक आधुनिकीकरण और राजनीतिक विकास को एक ओर अलग रखा जा रहा था, तब लोकतंत्रीकरण की एक अन्य लहर ने बल एकत्र करना आरम्भ कर दिया, जिसने महाद्वीपों में व्यापक तौर पर सत्तावादी शासनों को उखाड़ फेंका और उसके स्थान पर लोकतंत्र की स्थापना की। इसने तुलनात्मक राजनीति में एक बिल्कुल नए दृष्टिकोण और रचना को जन्म दिया हैं (इस पाठ्यक्रम का खंड चार देखें)।

ये लोकतांत्रिक परिवर्तन भी आर्थिक विकास के प्रभावशाली दौरों का अनुसरण करते हैं या एक मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के साथ सहसंबद्ध है। इससे राजनीतिक आधुनिकीकरण और विकास में रूचि का पुनरूद्धार हुआ है, हालांकि यह अधिक सूक्ष्म है।

इस वाद–विवाद में प्रमुख प्रतिभागियों में से एक एडम प्रज़ेवोर्स्की ने अपनी कृति 'डेमोक्रेसी एंड डेवलल्पमेंटः पोलेटिकल इंस्टीट्यूशन एंड वेल बीइंग इन द वर्ल्ड, 1950–1990 (2000)' में राजनीतिक शासन पर आर्थिक विकास के प्रभाव के बारे में सीमोर लिपसेट के शोध का आकलन किया और पाया कि उच्च स्तर के आर्थिक विकास और स्थिरता के बीच संबंध के विषय में लिपसेट के तर्क समर्थित हैं। अपने अन्य कार्यों में प्रेज़ेवोर्स्की ने तर्क दिया है कि 1960 के दशक के विकासवाद ने लोकतंत्र की स्थापना (लोकतंत्रीकरण) और इसकी स्थिरता (समेकन) के बीच अंतर करने में अपनी विफलता में भूल की है। उनका निष्कर्ष यह है कि आर्थिक विकास ने लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन इसकी स्थिरता में नहीं।

आधुनिकीकरण और विकास पर बहस में एक अन्य भागीदार रोनाल्ड इंगलहार्ट (मार्डनाइजेशन, कल्चरल चेंज, एंड डेमोक्रेसीः द हयूमन डेवलपमेंट सिक्वेंश, 2005) थे। इंगलहार्ट ने वैश्विक मूल्य सर्वेक्षण से एकत्र किए गए आकड़ों की एक बड़ी मात्रा का उपयोग करते हुए तर्क दिया है कि व्यावहारिक परिवर्तन आर्थिक विकास एवं राजनीतिक परिणामों के बीच महत्वपूर्ण हस्तक्षेप करने वाला चर, समाज में वर्ग बलों का बदलता संतुलन हैं।

शीत युद्ध के बाद के वर्षो में, उदार लोकतंत्र की प्रबलता ने राजनीतिक विकास की प्रकृति और दायरे में गतिशील परिवर्तन किए है। राज्य ने नागरिकों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान किए हैं। राजनीतिक विकास के विमर्श में मानवाधिकारों ने बहुत महत्व प्राप्त कर लिया हैं। राजनीतिक विकास तीसरी दुनिया के देशों की राजनीतिक व्यवस्था में संवैधानिक अधिकारों, सकारात्मक कार्रवाई की नीतियों के कार्यान्वयन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं, (किंग्सबरी 2007)। अब तुलनात्मक राजनीति का वर्तमान में केंद्रबिंदु लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में स्वायत्तता, स्वतंत्रता, समानता और न्याय है।

3.6 सारांश

इस इकाई में, हमने राजनीतिक विकास में हुए परिवर्तनों का अनुरेखण विकासशील दुनिया में उनकी व्याख्या करने के लिए एक दृष्टिकोण के रूप में किया है। जैसा कि हमने देखा, संयुक्त राज्य अमरीका में तुल्नात्मक राजनीति की समिति ने राजनीतिक विकास एवं परिवर्तन के सिद्धांत की खोज तथा अमरीकी सरकार के नीतिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने में योगदान हेतु, राजनीति विज्ञान को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई। किन्तु यह विकास एवं परिवर्तन के सिद्धांतों के निर्माण में प्रगति नहीं कर पाई। राजनीतिक विकास के गठन की स्पष्ट परिभाषा की कमी के कारण ऐसा हुआ।

चूंकि, सन् 1960 में विकासशील विश्व में सैन्य तख्ता पलट तथा सत्तावादी राजनीति की लहर थी, आधुनिकीकरण सिद्धांत पर आधारित राजनीतिक विकास ने अपना अधिकांश आकर्षण खो दिया था और तब निर्भरता सिद्धांत सामने आया। निर्भरता सिद्धांत ने तर्क दिया कि अल्पविकास/पिछड़ापन विश्व परिधि एवं पूंजीवादी तत्व के बीच के संबंधों पर आश्रित एक उत्पाद है। निर्भरता सिद्धांत के लिए विश्लेषण की इकाई वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था थी। अल्पविकसित देशों के पास इस अल्पविकासशीलता के जाल से वैश्विक व्यवस्था को तोड़े बिना बाहर निकलने की कोई सूरत नहीं थी।

सन् 1970 के दशक में कुछ एशियाई देशों तथा अर्जेंटीना से तीव्र आर्थिक विकास के प्रमाण जैसे ही मिले, निर्भरता सिद्धांत ने अपना व्याख्यात्मक मूल्य खो दिया। राज्यवाद जिसने राज्य के नेतृत्व वाले विकास को प्राथमिकता दी सन् 1980 के दशक में उभरा।

सन् 1970 के दशक के अंत में, लोकतंत्रीकरण की एक नई लहर आई, जिसे अधिकतर लोकतंत्रीकरण की तीसरी लहर के रूप में वर्णित किया जाता है। इस लहर ने उत्तर–औपनिवेशिक विश्व एवं साम्यवादी तथा सत्तावादी शासन में विकासशील देशों को प्रभावित किया। इस लोकतांत्रिक परिवर्तन ने राजनीतिक विकास के दृष्टिकोण को पुनर्जीवित किया। आज व्यापक सहमति के साथ, जिस आर्थिक वातावरण में राजनीतिक विकास होता है (चाहे वह आंतरिक स्रोतों से उत्पन्न हो, सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक – या बाहरी स्रोतों से) राजनीतिक लोकतंत्र सहित विभिन्न राजनीतिक रूपों के उद्भव के लिए एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक कारक है।

3.7 संदर्भ

एडेनिरन, टी. (1975). 'द सर्च फॉर ए थ्योरी ऑफ पॉलिटिकल डेव्लपमेंट', *ट्रांज़िशन,* (48), 25–28.

एल्मंड ए. गैब्रिअल, जी. बिंघम रस्सल जे. डॉल्टन, कारे स्टोर्म. (2011). *कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स् टुडे : ए वर्ल्ड व्यू.* न्यू दिल्लीः पीअरसन ऐजुकेशन.

ब्रोड, जॉन. (1969). *द प्रासेस ऑफ मॉडर्नाइज़ेशन : एन एनोटेटिड बिबलिओग्राफी ऑफ द सोशिओ कल्चरल एस्पेक्ट्स ऑफ डेव्लपमेंट.* कैम्ब्रिज, एमएः हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

हैगोपिएन, फ्रांसिस. (2000). *'पॉलिटिकल डेव्लपमेंट रीविज़िटिड'. कम्पैरेटिव पॉलिटिकल स्डीज़,* 33(6/7): 880–911.

हंटिंगटन एस.पी. (1968). *पॉलिटिकल आर्डर इन चेंजिंग सोसाइटीज़. न्यू हैवेन;* येल युनिवर्सिटी प्रेस.

किंग्स्बरी डामिन (2007). *पॉलिटिकल डेव्लपमेंट.* लंडनः रतुलएज.

नेट्ट जे.पी.(1969). *'स्ट्रैटेजीज़ इन द स्टडी ऑफ पॉलिटिकल डेव्लपमेंट'* इन कोलिन लेयज़ (एड.) पॉलिटिकस् एंड चेंज इन डेव्लपिंग कंट्रीज़. लंडनः कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस.

पाई, लुसिअन डब्ल्यु (1968). *'टाइपोलोजीज़ एंड पॉलिटिकल डेव्लपमेंट'* . पॉलिटिको, 33(4), 725–733.

स्मिथ बी.सी. (2003). *अंडरस्टैंडिंग थर्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्स् : थ्योरीज़ ऑफ पॉलिटिकल चेंज* दृ न्यूयार्क : पॉलग्रेव.

सो, एल्विन. (1988). *सोशल चेंज एंड डेव्लपमेंट : मॉडर्नाइज़ेशन, डिपेंडेंसी एंड वर्ल्ड–सिस्टम थ्योरीज़.* न्यू दिल्ली : सेज पब्लिकेशनस्.

थौमस जौर्ज (2011). *'व्हाट इज़ पॉलिटिकल डेव्लपमेंट? ए कॉन्स्टिट्यूशनल पर्सपेक्टिव'* . *द रिव्यू ऑफ पॉलिटिक्स्,* 73(2), 275–294.

विअर्दा होवर्ड जे एंड स्कैली एस्थर. (2007). *कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स् : एप्रोचिज़ एंड इशूज़.* न्यू यार्क : रोअमैन एंड लिटिल फाइल्ड पब्लिशर्स.

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) राजनीतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक आवश्यकताएँ उच्च साक्षरता, आर्थिक विकास, कृषकों एवं श्रमिकों का संघटन, आधुनिक संचार आदि थी

बोध प्रश्न 2

1) निर्धारित निर्गत किए गए कार्य थे : नियम बनाना, नियम कार्यान्वयन तथा नियम न्याय निर्णयन

2) निर्भरता सिद्धांतकारों ने यह तर्क दिया कि लैटिन अमरीकी राज्य उनके घरेलू कारकों के कारण से अविकसित नहीं हैं अपितु विश्व की अर्थव्यवस्था की संरचना के कारण से। ए. जी. फ्रेंक के अनुसार, विकास तथा अविकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं; एक ही प्रक्रिया के दो सिरे – विश्व स्तर पर महानगरीय पूंजीवादी विकास तीसरी दुनिया में 'अल्पविकास का विकास' करता है

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY